

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम

आदावे बंदगी

मुअल्लिफ

मौलाना अख्तरुल क़ादरी

बानी दारुल उलूम अहमदिया बर कातिया
सेवा इच पार, ज़िला संत कबीर नगर, यू०पी०
मो० नं० 09919696375

प्रकाशक

शोब-ए-नशरियात

दारुल उलूम अहमदिया बर कातिया
सेवा इच पार, ज़िला संत कबीर नगर, यू०पी०

जुम्ला हुकूम ब-हक्के मु-अल्लिफ महफूज

नाम किताब	आदाबे बंदगी
नाम मुअल्लिफ	मौलाना अख्तरुल कादरी बानी दारुल उलूम अहमदिया बरकातिया सेवाइच पार, ज़िला संत कबीर नगर, यू०पी० मो० नं० 09919696375
नज़रे सानी व ताक्दीम	मौलाना साजिद अली मिस्बाही उस्ताज़:जामिया अशरफिया, मुबारकपुर, आज़मगढ़ यू०पी०, मो० नं० 09450827590
प्रूफ रीडर्स	मौलाना सफीउल्लाह मिस्बाही धर्म सिंहवा बाज़ार, संत कबीर नगर, मो० नं० 09565070120 मौलाना अजहरुदीन खान मिस्बाही, बलरामपुर मो० नं० 08172890288
तादादे सफहात	76
सने तबाअत	मुह्रम 1440 हि०/सितम्बर 2018 ई०
क्रीमत	50 रूपये

मिलने का पते :

शोब-ए-नशरियात

दारुल उलूम अहमदिया बर कातिया सेवा इच पार,
ज़िला संत कबीर नगर, यू०पी०

www.ahmadiabarkatia.in Email: ahmadiabarkatia@gmail.com

इमाम अहमद रजा लाइब्रेरी

कसया, पो० मेहंदू पार, ज़िला संत कबीर नगर, यू०पी०

हाफिज़े मिस्बात लाइब्रेरी

धर्म सिंहवा बाज़ार, ज़िला संत कबीर नगर, यू०पी०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
मजामीन की एक झलक

इजहारे हकीकत	5	ज़रूरी हेदायत	25
तकरीजे जलील	6	जुमा के आदाब	26
तकदीम (किताब व मुअल्लिफे किताब)	8	नमाजे इस्तेखारा	27
बारगाहे खुदावन्दी के आदाब	14	सलातुत तस्बीह	28
वुजू का बयान	15	नमाजे हाजत	29
वुजू की फ़ज़ीलत	15	सलातुल असरार	30
वुजू करने का तरीक़ा	16	नमाजे तौबा	30
आज़ा ए वुजू धोने की दुआ	17	नमाजे जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा	31
गुस्ल का तरीक़ा	19	नमाजे जनाज़ा की दुआ	31
मस्जिद में दाखिल होने के आदाब	19	जनाज़ा के साथ चलने के आदाब	32
अज़ान कहने की फ़ज़ीलत	19	ताज़ियत करने वाले के आदाब	32
कलमाते अज़ान	20	रोज़े का बयान	32
अज़ान का जवाब देने की फ़ज़ीलत	20	माहे रमज़ान की फ़ज़ीलत	34
नमाज़ के आदाब	21	रोज़ा और उसके दर्जे	35
नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा	22	रोज़े के आदाब	36
सना	22	रोज़ा की नीयत	36
तशह्हुद	23	सेहरी व इफ्तार	36
दरूद शरीफ	23	दुआए इफ्तार	37
दुआ-ए-मासूरा	23	एतेकाफ	37
दुआ के आदाब	24	एतेकाफ के आदाब	38
नमाज़ के बाद के अज़कार व दुआ	24	ज़कात का बयान	38

ज़कात न देने का अज़ाब कुरआन की रौशनी में	39	पड़ोसी के हुकूक	54
		मुतफ़र्रिक आदाब	55
ज़कात न देने का अज़ाब अहादीस की रौशनी में	39	खाना खाने का तरीका	57
		पानी पीने का तरीका	57
जेवरात की ज़कात	41	कपड़ा पहनने की दुआ	58
खेती और फलों की ज़कात	42	किसी के घर जाने के आदाब	59
सदक़-ए-फ़ित्र का बयान	42	सलाम के मसाएल	59
मांगना किसे हलाल है और किसे नहीं	43	छींक के मसाएल	60
सदक़ा व खैरात के आदाब	43	गीबत का मतलब	61
सदक़ा देने वाले के आदाब	43	नाखून तरशवाना	62
ग़नी के आदाब	44	जानवर लड़ाना और कुशती लड़ना	62
हज का बयान	44	सोने के आदाब	63
हज की फ़ज़ीलत	45	बैतूल खला के आदाब	63
आदाबे सफ़र व मुक़ददेमाते हज	47	मुतफ़र्रिक़ दुआएं	64
तोहफ़ा देने वाले के आदाब	52	खुतब-ए-ऊला बराए जुमा	67
तोहफ़ा लेने वाले के आदाब	52	खुतब-ए-सानिया बराए जुमा	68
आलिम के पास हाजरी के आदाब	52	कुरआने करीम कि ग्यारह सूरतें	65
तालिबे इल्म के आदाब	52	शजर-ए-आलिया कादरिया	70
वाज़ व नसीहत सुनने वाले के आदाब	53	बरकातिया रज़विया	
वालेदैन के आदाब	53	मुनाजात	73
औलाद के आदाब	53	दारूल ओलूम अहमदिया	75
इस्लामी भाई चारा के आदाब	53	बरकातिया का तआरुफ़	
पड़ोसी के आदाब	54	तासुरात और दुआइया कलमात	78

इज़हारे हकीकत

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहू व नोसल्ली अला रसूलेहिल करीम

आदाबे बन्दगी के फ़ज़ाएल व महामिद पर अकाबिरे ओल्माए केराम और सल्फ़े सालेहीन ने बेशुमार किताबें तसनीफ़ फ़रमाई हैं। और इन्शाअल्लाह क़यामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा, चूँकि एक ज़माने से अहबाब का इसरार था कि मैं “आदाबे बन्दगी” के हवाले से एक मुस्तनद व मोतबर किताब तरतीब दूँ, मगर अदीमुल फुरसती के बाइस यह कार्य टलता रहा।

रब्बे क़दीर जल्ला शानुहू का लामहदूद शुक्र व एहसान है कि उसने महज़ अपनी नवाज़ेशात बेकराँ से मुझ जैसे नाचीज़ और इल्मी सरमाया से मुफ़्तिस को अपने हबीब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तुफ़ेल आदाबे बन्दगी के मोक़द्दस उनवान पर यह चन्द औराक़ लिखने की सआदत नसीब फरमाई। इस तरह वह साअते सईद आ गई कि मैंने जिन औराक़ को पहले जस्ता-जस्ता लिख रखा था उसे नए सिरे से तरतीब देना शुरु कर दिया।

खुदाए वहदहु लाशरीक हमारी इस कोशिश को क़बूल फरमाए और जिन अहबाब का इसरार था उन्हें दारैन की सआदतों से शादकाम फ़रमाए बिल ख़ोसूस ब्रादरे मोकर्रम नेक दिल हज़रत मौलाना साजिद अली मिस्बाही मोदर्रिस अल्जामेअतुल अशरफ़िया मुबारकपुर, आजमगढ़ को उनकी कोशिशों का बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमाए क्योंकि अगर उनका क़लमी तआउन हमारे शामिले हाल न होता तो शायद यह किताब इस तरह से मंज़रे आम पर न आ पाती यह उनका बड़ा एहसान है कि उन्होंने अपनी बेपनाह मस्रुफ़ियात से हमारे लिए वक़्त निकाला और इस किताब की तस्हीह फ़रमाई और इसे इस लाएक़ बनाया कि मैं इसे आपके सामने पेश कर सकूँ।

दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला उनको और मुझको और मेरे वालदैन, असातज़ह और तमाम मुख़्लिस अहबाब को दोनों जहान की बरकतों से सरफ़राज़ फ़रमाए। आमीन

नाचीज़ अख़तरुल क़ादरी

बानी दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया

स्वाइच पार, पोस्ट- बेलराई, ज़िला सन्त कबीर नगर, यू०पी०

23 रबीऊल अब्वल 1434 हिजरी, 5 फरवरी 2013, मंगल

तकरीजे जलील

पीरे तरीकत जानशीने सूफिए मिल्लत हज़रत सैय्यद सफी अहमद दामत बरकातोहोमुल आलिया सज्जादह-नशीन खानकाहे आलिया कादरिया चिशितया सोहरवरदिया झूसी शरीफ़ इलाहाबाद, यू०पी०।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहू व नोसल्ली अला रसूलेहिल करीम

आदाबे बन्दगी की अहमियत व फज़ीलत अहले ईमान के नज़दीक मोसल्लमात से है और यह भी मुत्तफ़क़ अलैह है कि आदाबे बन्दगी कुर्बे रब्बे कदीर व रज़ाए इलाही का सबसे बड़ा ज़रीआ भी, लेकिन इसके साथ यह बात भी मुसल्लम है कि आज आदाबे बन्दगी ही से सबसे ज़्यादा ग़फ़लत बरती जाती है जो ईमान के कमज़ोर होने की दलील है और हुब्बे दुनिया और ऐश परस्ती की भी। ऐसे माहौल में ज़रूरत है कि आदाबे बन्दगी के फज़ायल व बरकात और उसकी अहमियत पर मज़ामीन तकरीरों और तहरीरों दोनों तरह से आम किये जायें।

फ़कीर ने फ़ाज़िले अज़ीज़ हज़रत मौलाना अख़तरुल कादरी सल्लमहुल मौला की किताब आदाबे बन्दगी को देखा, किताब पसन्द आई। फ़ाज़िले अज़ीज़ की यह कोशिश न सिर्फ़ यह कि काबिले तआरीफ़ है, बल्कि लाएके तक़लीद भी है। किताब के अकसर मुन्दरजात हवालों से मोज़य्यन हैं। इसलिए यह किताब “आदाबे बन्दगी” लायके मोतालआ और काबिले एतमाद भी, बेशक यह किताब अपने मौजूअ के एतबार से बेहद अफ़ादियत की हामिल है बल्कि इसे आदाबे-बन्दगी के बारे में नए बाब का इज़ाफ़ा कहा जा सकता है।

मौलाना मौसूफ़ मोज़ा कसया पोस्ट मेहन्दूपार ज़िला सन्त कबीर नगर जो मेरे वालिदे गरामी सूफी मिल्लत हज़रत सैय्यद मोहम्मद आलम अलैहिर्रहमतो रिज़वान के मख़सूस मोरीदों व अक़ीदतमन्दों का मरकज़ है उसके एक खुश अक़ीदह और दीनदार घराने में पैदा हुए। इब्तेदाई तआलीम गाँव ही के एक दीनी

इदारह दारुल ओलूम अजीज़िया अहले सुन्नत शम्सुल ओलूम में हासिल की। आला तआलीम हासिल करने के लिये दारुल ओलूम अहले सुन्नत तनवीरुल इस्लाम अमरडोभा में दाखेला लिया और दर्से नेज़ामी की मुन्तही किताबें वहीं के जलीलुलकद्दर असातज़ाह ये पढ़ी। फ़राग़त के साल नाशिरे मस्लके आला हज़रत हुज़ूर शोयेबुल औवलिया अलैहिर्रहमह के कायम करदह दीनी अदारह दारुल ओलूम फैज़ुरसूल बराऊँ शरीफ चले गये और वहीं से दो साल बाद उर्स शोयेबुल औवलिया के रुहानी फैज़ान में जुब्बा व दस्तार से नवाज़े गये।

फ़राग़त के बाद दीनी व तबलीगी काम मुल्क की राजधानी (देहली) जैसी सरज़मीन से शुरु किया। इस तरह 2006 तक मौलाना मौसूफ ने वहाँ काम किया, चूँकि मौलाना मौसूफ अहदै तहसील से ही कुछ कर गुज़रने का जज़बा रखते थे। इसलिये देहली से वापस अपने गाँव का रुख किया और आबाई वतन कसया मेहन्दूपार से हिजरत करके मौज़ा स्वाइच पार पोस्ट बेलराई ज़िला सन्त कबीर नगर में एक वसीअ व अरीज़ क़ि़तए आराज़ी पर दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया के नाम से एक एदारह कायम करके अच्छे असातज़ह की खिदमात हासिल कीं। अब वह एदारह तआमीर के साथ-साथ तआलीम व तरबियत के लेहाज़ से सूबह उत्तर प्रदेश का एक अच्छा एदारह हो गया है।

मौलाना मौसूफ शब व रोज़ दारुल ओलूम की तआमीर व तरक्की के लिये कोशिशें रहते हैं। इनकी यह किताब “आदाबे बन्दगी” देखकर अन्दाज़ा हुआ कि अब मौलाना मौसूफ का तस्नीफ़ व तालीफ़ की तरफ़ मैलान हो चुका है और यह काबिले सताइश मैलान है।

दुआ है कि मौलाये क़दीर मौलाना की इस काविश को शरफ़ क़बूल से नवाज़े, अवाम के लिए ज़रिये हिदायत बनाये और क़लम में मज़ीद तवानायी अ़ता फरमाकर मौलाना को हुज़ूर वालिदे गरामी सूफिये मिल्लत सैय्यद मोहम्मद आलम अलैहिर्रहमह के फैज़ान से वाफ़िर हिस्सा अ़ता फरमाए। आमीन बजाह सैय्यदुल मुर्सीलीन अ़लैह व अ़ला आलेही अकरमस सलात व तस्लीम।

फ़कीर सैय्यद सफ़ी अहमद कादरी चिश्ती

सोहरवरदी खानकाहे आलिया कादरिया

चिश्तिया सोहरवरदिया, झूंसी शरीफ, इलाहाबाद, यू०पी०

23 रबीउल्ल अब्वल 1434 हि०, 5 फरवरी 2013 मंगल

तकदीम

किताब व मवल्लिफे किताब

मौलाना साजिद अली मिस्बाही उस्ताद
जामेआ अशरफिया, मुबारकपुर ज़िला आजमगढ़।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू व नोसल्ली व नोसल्लेमो अला रसूलेहिल करीम

आज से करीब सालभर पहले की बात है कि एक मुलाकात में गरामी कद्र मौलाना अखतर हुसैन कादरी (अखतरुल कादरी) ने अपनी मोरत्तब करदह किताब “आदाबे बन्दगी” का जिक्र छोड़ा और मुझे हुक्म दिया कि मैं इसे एक नज़र देख लूँ और जहाँ मोनासिब समझूँ हज़फ व इज़ाफ़ा भी कर दूँ, ताकि यह किताब जल्द से जल्द मन्ज़रे आम पर आ जाये। मौलाना की महब्वतों के पेशेनज़र मैं इन्कार न कर सका और इस ख्याल से वादा कर लिया कि-

ख्याले खातिर अहबाब चाहिए हर दम

अनीस टेस न लग जाये आबगीनों को

मैंने वादा तो कर लिया, मगर तदरीसी मसरुफ़ियात के बाइस यह काम मोअख़र होता रहा, फिर इत्मीनान था कि शबे बरात के बाद फुरसत रहेगी तो यह काम आसानी से हो जायेगा, लेकिन हर सोचा काम कहाँ होता है, वही होता है जो मन्ज़ूरे खुदा होता है।

8 रजब 1433 हि०/३० मई 2012 बुध की रात में अचानक शरीक हयात (बीवी) की तबीअत ख़राब हो गयी और सुबह होते-होते मौत व हयात की कश्मकश में आजमगढ़ के एक हॉस्पिटल में बड़ा ऑपरेशन हुआ खुदा के फज़ल व करम से उनकी जान तो बच गई मगर नौमौलूद ने इस खुली फ़ेज़ा

में साँस लेने से पहले ही साथ छोड़ दिया। वतन से दूरी का करबनाक एहसास उस वक्त बड़ी शिद्दत से हुआ। अजनबी शहर में लरज़ते हाथों से उसे कब्र की आगोश में रखा। और बीवी की जान बचने पर परवरदेगारे आलम का शुक्र अदा किया।

अभी यह ज़ख्म मुन्दमिल भी न हो सका था कि रब्बे करीम की जानिब से एक और आजमाईश में मुब्तला हो गया 13 शआबान 1433 हि० / 4 जुलाई 2012 बरोज़े शम्बा राहते क़ल्ब व जान, नूरे नज़र, अज़ीज़म मोहम्मद नोमान की तबीयत अचानक ज़्यादा खराब हो गयी। अहले खाना और अहबाब व अकारिब जीजान से उसे बचाने की कोशिशें करते रहे, मगर उसका मोकररह वक्त पूरा हो चुका था, इसलिये सारी तदबीरें और सब कोशिशें बेसूद साबित हुयीं, और रात ही में करीब साढ़े बारह बजे नौ साल चार माह की उम्र में वह भी हमें गमज़दह छोड़कर इस दुनिया से रुख़सत हो गया। (परवरदेगारे आलम उसकी कब्र पर रहमतो अनवार की बारिश फरमाए।) सच ही कहा गया है-

तकदीर के चाक को मुम्किन नहीं करना रफ़ू

सोज़ने तदबीर सारी उम्र गो सीती रहे

इसकी वजह से यह भरी पुरी दुनिया मेरी निगाहों में तारीक हो गयी, और पैहम आजमाइशों ने मुझे कुछ करने और सोचने के लायक नहीं छोड़ा, इस दर्दनाक और करबअंगेज़ हादसा में अगर दीनी तालीम ने सहारा न दिया होता तो यकीनन सब्र व शुक्र का दामन हाथों से छूट जाता मुख़तसर यह कि सब्र व शुक्र की कोशिश करता रहा, कि कुरआन मजीद में रब्बे करीम का इर्शाद है।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ
وَالشَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۗ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ
رَاجِعُونَ ۗ (پاره ۲، البقره ۲، آیت ۱۵۵، ۱۵۶)

तर्जुमा: और ज़रूर हम तुम्हें आजमायेंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से, और खुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर कोई मोसीबत पड़े तो कहें: हम अल्लाह के माल हैं और हमको उसी की तरफ़ फ़िरना। (कन्जुल ईमान)

यूँ ही शब व रोज़ गुज़रते रहे और आहिस्तह-आहिस्तह ग़म व करब की शिद्दत भी कम होती रही। अलहमदोलिल्लाह अब जबकि सारे काम ह़स्बे मामूल अन्जाम पाने लगे तो मौलाना मौसूफ की किताब का मोसव्वा देखा, जो समझ में आया हज़फ़ व इज़ाफ़ा किया और इस तरह से यह किताब जो एक साल क़ब्ल आपके हाथों में होनी चाहिए थी वह मेरी वजह से एक साल बाद आप तक पहुँच रही है, और इसमें मेरा कोई कुसूर भी नहीं है। सच फ़रमाया है इमामे अहमद रज़ा हन्फ़ी कादरी कुद्दिसा सिर्रहु ने-

ऐ रज़ा हर काम का एक वक़्त है

दिल को भी आराम हो ही जायेगा

मौलाना मौसूफ की इस किताब (आदाबे बन्दगी) में अवाम अहले सुन्नत के लिये बड़ी कारआमद बातें जमा कर दी गयी हैं। मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तअ़ाला अ़लैहे वसल्लम का इर्शाद है-

بُئِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ.

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है: (1) इस बात की शहादत देना कि अल्लाह तअ़ाला के सेवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मोहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। (2) नमाज़ कायम करना (3) ज़कात देना (4) इस्तेताअ़त हो तो ख़ानये क़आबा का हज़ करना (5) माहे रमज़ान के रोज़े रखना। (सहीहूल बुख़ारी, किताबुल ईमान, हदीस नं० 8)

इस किताब में इस्लाम के अरकाने ख़मसा में से चार (नमाज़, रोज़ा, ज़कात व हज़) से मोतअ़ल्लिक कुरआन व हदीस की रोशनी में काफ़ी मआलूमात फ़राहम की गई है। और रुकून अव्वल का तज़करह शायद इसलिये नहीं किया गया है कि यह किताब तो उन ही लोगों के लिये मोरत्तब की गई है जो इस बात की शहादत देते हैं कि अल्लाह तअ़ाला के सेवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मोहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। यानी वह रुकून अव्वल पर कारबन्द और मुसलमान हैं।

इस किताब का बुनियादी माख़ज़ सदरुस शरीअ़ह मुफ़ती अमजद अली आज़मी अ़लैहिर्रहमत व रिज़वान मशहूरे ज़माना की किताब “बहारे शरीअ़त”

और इमाम गेज़ाली की किताब “आदाबे दीन” है मगर उसके साथ बहुत सी दूसरी किताबों मसलन सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, सोनन अबू दाऊद, सोनन नेसाई, सोनन इब्ने माजह, जामेअ तिरमिज़ी और शामी व आलमगीरी वगैरह अस्ल मअ़ख़ज़ के हवाले भी दर्ज है जो इसके मुन्दरजात की कूवत व अहमियत वाज़ह करते हैं।

मज़कूरह ओमूर के अ़लावह इस्ताहे मअ़ाशरह के तअल्लुक से भी काफी कुछ जमा कर दिया गया है। मस्लन ओलमा, तल्बा, अ़वाम अहले सुन्नत, वालेदैन, औलाद और पड़ोसियों के होकूक व आदाब और खाने-पीने, पहनने ओढ़ने, सोने, जागने वगैरह के ओसूल व आदाब नेहायत आसान और मोअस्सिर लब व लेहजे में बयान किये गये हैं। साथ ही कम पढ़े लिखे लोगों के लिए बअज़ दोअयें, अ़ाम तौर से नमाज़ में पढ़ी जाने वाली कुरआन करीम की सूरतें और दुअ़ा व मोनाजात भी इस किताब में शामिल हैं। अहम्मह मसाजिद की आसानी के लिए खुतबये-जुमा भी नक़ल कर दिया गया है, इन चीज़ों की वजह से किताब की अहमियत व अफ़ादियत और बढ़ गयी है।

खुलासये कलाम यह है कि मौलाना अख़तरुल कादरी की यह किताब (आदाबे बन्दगी) अ़वाम के लिए नेहायत मोफ़ीद और नफ़अ़ा बख़्श है। ज़रूरत है कि ऐसी किताबें ज़्यादाह से ज़्यादाह अ़ाम की जायें और लोगों में मुफ़्त तक़सीम करने का इन्तेज़ाम किया जाये ताकि ख़ाही न ख़ाही लोग उसे पढ़ें और अ़मल करने की कोशिश करें।

इस किताब के मोअल्लिफ़ मौलाना अख़तरुल कादरी मौज़ा कसया, पोस्ट मन्हदूपार ज़िला बस्ती (मौजूदह ज़िला सन्त कबीर नगर) के एक दीनदार घरानें में पैदा हुये और उसी गाँव में मौलाना की नोशूनुमा हुई। मार्कशीट के मोताबिक़ इनकी तारीख़ पैदाइश 8 फरवरी 1976 ई० है।

गाँव ही के एक दीनी इदारह दारुल ओलूम अज़ीज़िया अहले सुन्नत शमसुल ओलूम में इब्तेदाई तअ़ालीम हासिल की। इसके बाद अ़ाला तअ़ालीम हासिल करने के लिए अ़लाके की मशहूर दरसगाह दारुल ओलूम तनवीरुल इस्लाम अमरडोभा में दाख़ेला लिया। छः साल तक हस्बे इस्तेताअत मेहनत व दिल जर्मई से वहाँ तअ़ालीम हासिल करते रहे, फिर दारुल ओलूम फैज़ुरसूल, बराऊँ शरीफ

चले गये और वहीं से दो साल बाद 1994 ई० में सनद फ़रागत हासिल की।

दौरे तालिबइल्मी से ही मौलाना के अन्दर कुछ कर गुज़रने का जज़बा था, जिस वक़्त वह दारुल ओलूम तनवीरुल इस्लाम में ज़ेरे तआलिम थे इसी वक़्त से जगह-जगह छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरु कर दिया था। ख़ेताबत से भी काफ़ी दिलचस्पी रखते थे। उनकी सरगरमियों को देखकर इसी वक़्त उनको “इस्लाही साहब” कहा जाने लगा था। उस वक़्त तो यह नाम एक ख़ूबसूरत मज़ाक मालूम होता था, मगर फ़रागत के बाद मौलाना ने जो काम किया उसे देखकर यह कहा जा सकता है कि-

बालाये सरश ज़होश मन्दी

मी ताफ़त सितारये बुलन्दी

आज देखा यह जा रहा है कि बहुत से त़लबह फ़ारिग़ हो जाते हैं और उनके सामने कोई मन्ज़िल नहीं होती, जब उनसे पूछा जाता है कि अब क्या करेंगे? तो हैरतनाक बेतवज्जही से कहते हैं: “देखा जायेगा, अभी घर वालों से इस बारे में कोई बात नहीं हुई है, ईद बाद सोचेंगे” वग़ैरह-वग़ैरह, मगर मौलाना मौसूफ़ का हाल इससे बिलकुल मुख़तलिफ़ था, उन्होंने सनद व दस्तावे फ़ज़ीलत हासिल करने से पहले ही अपना मैदाने अमल मुन्तख़ब कर लिया, बल्कि उसके मोताबिक़ अमल भी करना शुरु कर दिया था।

सबसे पहले उन्होंने मुल्क की राजधानी (देहली) का रुख़ किया और वहाँ दारुल ओलूम नेज़ामिया अहले सुन्नत ग़ौसुल ओलूम, शकूरपुर में बहैसियते सदरुल मोदर्रेसीन काम का आगाज़ किया। वहाँ मौसूफ़ सिर्फ़ प्रिंसिपल ही नहीं थे बल्कि उस इदारह के इन्तेज़ामी ओमूर की ज़िम्मेदारियाँ भी निभाते रहे। इस तरह से २००६ तक मौलाना ने वहाँ काम किया। लेकिन किसी की मातहती में रहकर काम करने का भरपूर मौका नहीं मिल रहा था इसलिये खुद मुख़तार होकर कुछ करने का मन्सूबा बनाया और दिल्ली छोड़कर अपने घर आ गये।

कोई बड़ा और नोमाया काम करने का इरादह मुस्तहक़म था इसलिये भागदौड़ करते रहे और देखते ही देखते 5 नवम्बर 2006 में मौज़ा स्वाइचपार, पोस्ट बलरार्द, ज़िला सन्त कबीर नगर में एक इदारह की बुनियाद रखी और उसका नाम “दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया” मुन्तख़ब किया।

मौलाना मौसूफ़ ने अपने आबाई वतन से हिजरत करके उसी गाँव में अपना घर बना लिया है और शब व रोज़ इस इदारह की तअामीर व तरक्की के लिये कोशॉ रहते हैं।

उनकी यह किताब (आदाबे बन्दगी) देखकर अन्दाज़ह हुआ कि मौलाना को तसनीफ़ व तालीफ़ का भी ज़ौक़ है। लेकिन इदारह की मसरुफियात के बाइस इसकी तरफ़ ख़ातिर ख़ाह तवज्जह नहीं दे पाते।

ख़ुदाये वहदहू लाशरीक की बारगाह में दुआ है इलाहल अलमीन मौलाना की इस किताब को शरफ़े क़बूल अता फ़रमा और उनके इदारह को शब व रोज़ तरक्कियों से हमकिनार फ़रमा और हम सबसे वह काम ले जिसमें तेरी और तेरे हबीब की रज़ा शामिल हो। आमीन, बजाह हबीबेहिन्नबीइल करीम अलैहे व अला आलेहि अस्सलातो वत्तसलीम।

साजिद अली मिस्बाही

उस्ताज़ जामेआ अशरफिया मुबारकपुर, आजमगढ़
29 सफरुल मोज़फ़र 1434 हि० 12 जनवरी 2013

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहू व नोसल्ली व नोसल्लिम अला रसूलेहिल करीम

कुरआन करीम में खुदाये वहदहू लाशरीक का इर्शाद है, वमा ख़लक़तुल जिन्न वलइन्स इल्ला लेयाबोदून, 56 (और मैंने जिन और आदमी अपने ही लिये बनाये कि मेरी बन्दगी करें।) ज़ाहिर है कि जब हमारी और आपकी तख़लीक़ अल्लाह जल्लेशानऊ की बन्दगी के लिये हुई है तो हमें और आपको यह जानना बहुत ज़रूरी है कि अल्लाह तबारक व तआला की बन्दगी के आदाब क्या हैं? हम किस तरह अपने ख़ालिक़ व मालिक की इबादत व बन्दगी करें कि वह हमसे राज़ी हो जाये और हमारी इबादत व बन्दगी क़बूल फरमा ले।

इसी मकसद के पेशेनज़र हम इस मुख़्तसर सी किताब में बआज़ अहम इबादतों का ज़िक्र करते हैं और उनके ओसूल व आदाब पर रोशनी डालते हैं। उम्मीद है कि अल्लाह तबारक व तआला इसके बेहतर असरात ज़ाहिर फरमायेगा।

बारगाहे खुदावन्दी के आदाब:

बन्दे को चाहिए कि खुदाये वहदहू लाशरीक की बारगाह में अपनी निगाहें नीची रखे, अपने गुमों और परेशानियों को अल्लाह अज़्वजल की बारगाह में पेश करे, खामूशी की आदत बनाये, आज़ा को पुरसोकून रखे, जिन कामों का हुक्म दिया गया है उनकी बजाआवरी में जल्दी करे, और जिनसे मना किया गया है उनसे बचे, अच्छे अख़लाक़ अपनाये, हर वक्त ज़िक्रे इलाही की आदत बनाये, अपनी सोच को पाकीज़ा बनाये, आज़ा को काबू में रखे, दिल पुरसकून हो, अल्लाह तआला की तआज़ीम बजालाये, ग़ैज़ व ग़ज़ब न करे, मोहब्बते इलाही को लोगों से छिपाये, इख़लास अपनाने की कोशिश करे, लोगों के पास मौजूद माल व दौलत की तरफ़ नज़र करने से बचे, सहीह व दुरुस्त बात को तरज़ीह दे, मख़लूक से उम्मीद न रखे, अमल में इख़लास पैदा करे, सच बोले और

गुनाहों से बचे, नेकियों को ज़िन्दा करे, (यानी नेकियों पर अमल पैरा हो) लोगों की तरफ़ इशारह न करें और मोफीद बातें न छिपायें, नाम व नसब की तब्दीली पर ग़ैरत और हराम कामों के इरतेकाब पर ग़ैज़ व ग़ज़ब का इज़हार करे, हमेशा बावकार व पुरजलाल रहे, हया को अपना शेआर बना ले, खौफ़ व डर की कैफ़ियत पैदा करे, उस शख्स की तरह से मुतमइन्न हो जाये जिसे ज़मान दी गयी हो, तवक्कुल अपनाये कि तवक्कुल अच्छे इख़तयार की पहचान का नाम है, दुश्वारी के वक़्त कामिल वजू करे, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार करे, उसका दिल फ़र्ज़ छूट जाने के खौफ़ से बेचैन व मुज़्तरिब हो जाये, गुनाहों पर डटे रहने के खौफ़ से तौबह पर हमेशगी इख़तयार करे, और ग़ैब की तस्दीक़ करे, ज़िक्र करते वक़्त दिल में खौफ़े खुदावन्दी पैदा करे, वआज़ व नसीहत के वक़्त उसका नूरे बातनी ज़्यादह हो, फ़िक़र व फ़ाका (यानी तंगदस्ती) के वक़्त तवक्कुल को अपना शेआर बनाये, और जहाँ तक हो सके क़बूलियत की उम्मीद रखते हुये सदक़ह करे। (आदाबे दीन मुलख़बसन)

वजू का बयान:

खुदाये वहदहू लाशरीक का इशदि पाक है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَأَمْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ط (پاره ۶، المائدہ ۵، آیت ۶)

तर्जुमा:

ऐ ईमान वालो! जब नमाज़ को खड़े होना चाहो (और वजू न हो) तो अपना मुँह धोओ और केहुनियों तक हाथ और सरों का मसह करो और गट्टों (टखनों) तक पाँव धोओ।

वजू की फज़ीलत:

वजू की फज़ीलत से मोतअल्लिक बहुत सी हदीसें मरवी हैं। उनमें से बाज़ दर्ज ज़ेल हैं।

(1) हज़रत अबू होरैरह रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया: क़यामत

के दिन मेरी उम्मत इस हालत में बुलाई जायेगी कि उनके मुँह, हाथ और पांव आसारे वजू से चमकते होंगे। तो जिससे हो सके वह चमक ज़्यादा करे।

(बुखारी शरीफ, किताबुल वजू, हदीस नं० 136 जि०: 1 सफ़हा नं०: 71)

(2) हज़रते अबू होरैरह रज़ीअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि हुजूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने स़हाबह कराम से इरशाद फरमाया: क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूँ जिसके सबब अल्लाह तआला ख़तायें महव फरमा दे और दरजात बुलन्द करे। स़हाबये केराम ने अर्ज़ किया, हाँ या रसूलल्लाह, फरमाया: जिस वक़्त वजू नागवार होता है उस वक़्त कामिल वजू करना और मस्जिदों की तरफ क़दमों की कसरत और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार, उसका सवाब ऐसा है जैसा कुफ़ार की सरहद पर हेमायते बेलादे इस्लाम के लिये घोड़े बाँधने का।

(मुस्लिम शरीफ, बाबे फ़जल इस्बागुल वजू अललमकारेह हदीस नं०: 251, स०: 151)

(3) हज़रत अब्दुल्लाह सुनाबेही रज़ीअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया: मुसलमान बन्दह जब वजू करता है तो कुल्ली करने से मुँह के गुनाह गिर जाते हैं और जब नाक में पानी डालकर साफ किया तो नाक के गुनाह निकल गये और जब मुँह धोया तो उसके चेहरे के गुनाह निकले यहाँ तक कि पलकों के निकले और जब हाथ धोये तो हाथों के गुनाह निकले यहाँ तक कि हाथों के नाखूनों से निकले और जब सर का मसह किया तो सर के गुनाह निकले यहाँ तक कि कानों से निकले और जब पाँव धोये तो पावों की ख़ताएँ निकलीं यहाँ तक कि नाखूनों से, फिर उसका मस्जिद जाना और नमाज़ पढ़ना मज़ीद बरौ।

(नेसाई शरीफ, बाबे मसहूल उज़नैन मअर रास, हदीस नं०: 103, स०: 25)

वजू करने का तरीका:

वजू करने का तरीका यह है कि पहले बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़े, फिर मिस्वाक करे, अगर मिस्वाक न हो तो उँगली से दाँत मले फिर दोनों हाथ गट्टों तक तीन बार धोये, फिर दाहिने हाथ से तीन बार कुल्ली करे कि हर बार मुँह के हर पुरजे पर पानी बह जाये और रोज़हदार न हो तो ग़रगरह करे, फिर दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाये कि जहाँ तक नरम

गोशत होता है हर बार उस पर पानी बह जाये और रोज़हदार न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुँचाये फिर बायें हाथ की छोटी उँगली से नाक साफ करे, फिर पूरा चेहरा धोये, यानी पेशानी पर बाल उगने की जगह से थोड़ी के निचे तक और एक कान की लव से दूसरे कान की लव तक हर हिस्से पर तीन बार पानी बहाये, और अगर दाढ़ी है तो चेहरा धोते वक़्त दाढ़ी का ख़िलाल भी करें, इस तरह कि उँगलियों को गरदन की तरफ़ से दाख़िल करे और सामने निकाले, इसके बाद दोनों केहुनियों समेत तीन बार धोये, फिर एक बार दोनों हाथों से पूरे सर का मसह करे, फिर कानों का और गरदन का एक-एक बार मसह करें, फिर दोनों पाँवों टख़नों समेत तीन बार धोये।

आज़ाये वजू धोने के वक़्त यह दुआयें पढ़े:

कुल्ली करने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى تِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.

(ऐ अल्लाह! तू मेरी मदद कर कि मैं कुरआन की तिलावत और तेरा ज़िक्र व शुक्र करूँ और तेरी अच्छी तरह इबादत करूँ।)

नाक में पानी डालने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ أَرِحْنِي رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَلَا تُرْحِنِي رَائِحَةَ النَّارِ.

(ऐ अल्लाह! तू मुझको जन्नत की खुशबू सुँघा और जहन्नम की बदबू से बचा।)

मुँह धोने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ بَيِّضْ وَجْهِي يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهُهُ وَتَسْوَدُّ وُجُوهُهُ.

(ऐ अल्लाह! तू मेरा चेहरा रौशन कर जिस दिन कि कुछ चेहरे रौशन होंगे और कुछ स्याह।)

दाहिना हाथ धोने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ أَعْطِنِي كِتَابِي بِيَمِينِي وَحَاسِبِي حَسَابًا يَسِيرًا.

(ऐ अल्लाह! मेरा नामये आमाल मेरे दाहिने हाथ में देना और मुझसे आसान हिसाब करना।)

बायाँ हाथ धोने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ لَا تُعْطِنِي كِتَابِي بِشِمَالِي وَلَا مِنْ وَرَاءَ ظَهْرِي.

(ऐ अल्लाह! मेरा नामये आमाल न बायें हाथ में देना और न पीठ के पीछे से।)

सर का मसह करने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ أَظْلِنِي تَحْتَ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ.

(ऐ अल्लाह! तु मुझे अपने अर्श के साये में रखना जिस दिन तेरे अर्श के साये के सेवा कहीं साया न होगा।)

कानों का मसह करने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ.

(ऐ अल्लाह! मुझे उनमें कर दे जो बात सुनते हैं और अच्छी बात पर अमल करते हैं।)

गरदन का मसह करने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ أَعْتِقْ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ.

(ऐ अल्लाह! मेरी गरदन आग से आज़ाद कर दे।)

दाहिना पाँव धोने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِي عَلَى الصِّرَاطِ يَوْمَ تَرُلُّ الْأَقْدَامُ.

(ऐ अल्लाह! मेरा क़दम पुल सेरात पर साबित रख जिस दिन कि इस पर क़दम लगज़िश करेंगे।)

बायाँ पाँव धोने के वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ اجْعَلْ دُنْيِي مَعْفُورًا وَسَعْيِي مَشْكُورًا وَتِجَارَتِي لَنْ تَبُورَ.

(ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरी कोशिश बारआवर बना और मेरी तेजारत हलाक न हो। (कामयाब फरमा)।)

या हर अज़्व धोने के वक़्त सिर्फ़ दुरुद शरीफ़ पढ़े और यही अफज़ल है। और जब वजू से फ़ारिग़ हो तो यह दुआ पढ़े।

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ.

(ऐ अल्लाह! तू मुझे तौबा करने वालों और पाक लोगों में कर दे।)

(बहारे शरीअत हिस्सा दोम मुलख़सा)

गुस्ल का तरीका:

गुस्ल की नियत करके पहले दोनों हाथ गट्टों तक तीन मरतबह धोये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोये, ख्वाह नेजासत हो या न हो, फिर बदन पर जहाँ कहीं नेजासत हो उसको दूर करो। फिर नमाज़ की तरह वजू करे, फिर पूरे बदन पर तेल की तरह पानी मले खुसूसन जाड़े में, फिर तीन मरतबह दाहिने मूँठे पर पानी बहाये, फिर तीन मरतबह बायें मूँठे पर, फिर सर पर और पूरे बदन पर तीन बार पानी बहाये, और इसका ख्याल रखे कि कोई हिस्सा बाकी न रह जाये, और नहाने में किब्ला रुख न हो, और ऐसी जगह नहाये कि कोई न देखे और अगर यह न हो सके तो नाफ़ से घुटने तक के अज़ा का सतर तो ज़रूरी है और किसी किसम का कलाम न करे, न कोई दुआ पढ़े। (फ़तावा अलमगीरी)

मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब:

मस्जिद में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि पहले दायँ पाँव दाख़िल करे, जूतों पर गन्दगी वगैरह लगी हुई हो तो उसे झाड़ ले और अल्लाह तबारक व तआला का ज़िक्र करे, यानी मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

पढ़े, अगर मस्जिद में कोई मौजूद हो तो उसे सलाम करे, कोई न हो तो अपने आप पर सलाम भेजे, अल्लाह अज़्वजल से सवाल करे कि वह उसके लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे, किब्ला रु होकर बैठे, दिल में ख़ौफ़े खुदा पैदा करे, गुप्तगु कम करे, मस्जिद में लअान तअान करने से बचे, न तो मस्जिद में आवाज़ बुलन्द करे, और न दुनियवी काम करे, न गुमशुदह चीज़ तलाश करे, न ख़रीद व फ़रोख़्त करे, जब मस्जिद से निकले तो पहले बायँ यानी उल्टा पाँव बाहर निकाले और अल्लाह अज़्वजल से उस फज़ूल का सवाल करे जो वह अता करता है- यानी मस्जिद से निकलने की दुआ पढ़े।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ.

(आदाबे दीन मुलख़सस)

अज़ान कहने की फ़ज़ीलत:

हज़रत अमीर मोआवियह रज़ीअल्लाहो तआला अनहो से मरवी है कि

हज़ार दर्जे बलन्द फ़रमायेगा, और हज़ार गुनाह महव कर देगा। औरतों ने अर्ज़ किया: यह तो औरतों के लिये है, मर्दों के लिये क्या है? फ़रमाया: मर्दों के लिए दूना। (कन्जुल उम्माल, किताबुस्सलात, हदीस नं० 21005, जि० 7, स० 287)

अमीरुल मोमनीन हज़रत उमर रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया: जब मोअज़्ज़िन अज़ान दे तो जो शख्स उसके मिसल कहे और जब वह **حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ. حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ.** कहे तो यह **فُؤَةٌ إِلَّا بِاللَّهِ** कहे तो यह **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ** कहे तो यह जन्नत में दाखिल होगा। (मुस्लिम शरीफ़, बाबे इस्तीजाबुल क़ैल मिसल कौलुल मोअज़्ज़िन लेमन समआ, हदीस नं० 385, स० 203)

जब मोअज़्ज़िन **أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ.** कहे तो सुनने वाला दुरुद शरीफ़ पढ़े और मुस्तहब है कि अँगूठों को बोसा देकर आँखों से लगा ले और कहे **رَدُّدُلْ مَوْهَتَارْ** **فُؤَةٌ عَيْنِي بِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ.**

और जब मोवज़्ज़िन **أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ.** कहे तो उसके जवाब में **أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ.** कहे। (दुरे मुख़तार, रदुदुल मोहतार)

जब अज़ान खत्म हो जाये तो मोअज़्ज़िन और सामईन दुरुद शरीफ़ पढ़ें उसके बाद यह दुआ पढ़ें:

اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةُ الثَّامَّةُ وَالصَّلَاةُ الْقَائِمَةُ أَيْ سَيِّدَنَا مُحَمَّدِنِ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَالذَّرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودِنِ الذِّئى وَعَدْتُهُ وَاجْعَلْنَا فِي شَفَاعَتِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ. (ردالمحتار)

नमाज़ के आदाब:

नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिये कि आजजी व इनकेसारी और खुशूअ व ख़ोज़ुअ की कैफियत पैदा करे और होजूरे कल्बी के साथ नमाज़ पढ़े, वसवसों से बचने की कोशिश करे, ज़ाहरी व बातनी तौर पर तवज्जह से नमाज़ पढ़े, आज़ा पुरसकून रखे, निगाहें नीची रखे, कयाम में दायें हाथ बायें हाथ पर रखे, तिलावत में ग़ौर व फ़िक्र करे, डरते हुये और ख़ौफ़ज़दह होकर तकबीर कहे, ख़ौशूअ व ख़ौजूअ के साथ रुकूअ व सुजूद करे, तआज़ीम व तौकीर के साथ तस्बीह पढ़े, और तशहूहुद इस तरह पढ़े गोया अल्लाह तआला को देख रहा है, रहमत ख़ुदावन्दी अज़्वजल की उम्मीद रखते हुए सलाम फेरे, इस ख़ौफ़

से पलटे कि न जाने मेरी नमाज़ क़बूल भी हुई है या नहीं, और रज़ाये इलाही त़लब करने की कोशिश करे। (आदाबे दीन मुलख़ब़सन)

नमाज़ पढ़ने का तरीका:

नमाज़ पढ़ने का तरीका यह है कि बावजू किब्ला रु दोनों पाँव के पन्जों में चार अंगुल का फ़ासला करके खड़ा हो, और दोनों हाथ कान तक ले जाये, कि अंगूठे कान की लव से छू जायें और उंगलियाँ न मिली हुये रखे न खूब खोले हुये, बल्कि अपनी हालत पर हों और हथेलियाँ किब्ला को हों, नियत करके अल्लाहो अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाये और नाफ़ के नीचे बाँध ले, इस तरह कि दाहिने हाथ की गद्दी बायें कलाई के सिरे पर हो और बीच की तीन उंगलियाँ बायें कलाई की पुश्त पर और अंगूठा और छगुलियां कलाई के अगल बगल हों और सना पढ़े।

(ثَا) سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ.

फिर तफ़ज़ यानी **فِرِ التَّسْمِيَةِ** पढ़े फिर तस्मियह यानी **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** कहे, फिर **الْحَمْدُ** यानी पूरी सूरह फ़ातेहा पढ़े और ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कहे, उसके बाद कोई सूरत या तीन आयतें पढ़े या कोई बड़ी आयत पढ़े जो छोटी तीन आयतों के बराबर हो, अब अल्लाहो अकबर कहता हुआ रुकूअ में जाये और घुटनों को हाथ से पकड़े इस तरह कि हथेलियाँ घुटने पर हों और उंगलियाँ खूब फैली हों, इस तरह न हो कि सब उंगलियाँ एक तरफ हों, या चारों उंगलियाँ एक तरफ हों और सिर्फ अंगूठा दूसरी तरफ हो और पीठ बिछी हुयी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा-नीचा न हो, और कम से कम तीन बार **رَبِّيَ الْعَظِيمِ** कहे, फिर **اللَّهُمَّ رَبَّنَا** भी कहे, फिर अल्लाहो अकबर कहता हुआ सजदह में जाये, इस तरह कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे, फिर हाथ, फिर दोनों हाथों के बीच में सर रखे, इस तरह न हो कि सिर्फ पेशानी ज़मीन से छू जाये और नाक की नोक लग जाये, बल्कि पेशानी और नाक की हड्डी जमाये और बाजूओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिंडलियों से जुदा रखे और दोनों पाँव की सब उंगलियों के पेट किब्ला रु जमें

हों और हथेलियाँ बिछी हों और उंगलियाँ क़िब्ला को हों और कम अज़ कम तीन बार **رَبِّيَ الْأَعْلَى** कहे, फिर सर उठाये, फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करके उसकी उंगलियाँ क़िब्ला रुख करे और बायाँ क़दम बिछाकर उस पर खूब सीधा बैठ जाये और हथेलियाँ बिछाकर रानों पर घुटनों के पास रखे, कि दोनों हाथ की उंगलियाँ क़िब्ला को हों, फिर **اللَّهُ أَكْبَرُ** कहता हुआ सदजह को जाये और उसी तरह सजदा करे, फिर सर उठाये, फिर हाथों को घुटने पर रखकर पन्जों के बल खड़ा हो जाये अब सिर्फ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़कर केराअत शुरु कर दे, फिर उसी तरह रूकूअ और सजदे करके दाहिना क़दम खड़ा करके बायाँ क़दम बिछाकर बैठ जाये और तशहहूद पढ़े:

(شَهِدُ) **أَللّٰهُمَّ أَتَشْحِيَاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.**

इसमें कोई हरफ़ कम व बेश न करे और जब कलमये **لَا** के क़रीब पहुँचे तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हलक़ह बनाये और छगुलियाँ और उसके पास वाली को हथेली से मिला दे और लफज़ **لَا** पर कलमह की उंगली उठाये, मगर उसको जुम्बिश न दे और कलमह **إِلَّا** पर गिरा दे और सब उंगलियाँ फौरन सीधी कर ले।

अगर दो से ज़्यादाह रकअतें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और उसी तरह पढ़े, मगर फ़रज़ों की इन रकअतों में **الحمد** यानी सूरहये फ़ातेहा के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं, अब पिछला क़आयेदह जिसके बाद नमाज़ खत्म करेगा, इसमें तशहहूद के बाद दुरुद शरीफ़ पढ़े।

(درود شریف) **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَىٰ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ.**

फिर यह दुआये मासूर पढ़े:

(دعاے ماثور) **اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ تَوَلَّاهُ وَلِحَمِيحِ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْأَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْأَمْوَاتِ إِنَّكَ مُجِيبُ**

الدَّعَوَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

या दूसरी कोई दुआये मासूर पढ़े। मसलन:
 اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَ إِنَّهُ لَا يُغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ
 فَاعْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ.

या यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ رَبَّنَا اتَّبْنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

और इसको बगैर اللَّهُم के न पढ़े, फिर दाहिने शाने की तरफ मुँह करके करके اللهُ وَرَحْمَةُ اللهِ कहे, फिर बायें तरफ मुँह करे ऐसे ही कहे, यह तरीका इमाम या तनहा मर्द के पढ़ने का है। अगर किसी इमाम की इकतेदा में नमाज़ पढ़ रहा हो तो الحمد यानी सूरहये फातेहा या और कोई सूरत न पढ़े। (बहारे शरीअत हिस्सा सोम मुलख़बसन)

दुआ के आदाब:

दुआ करने वाले को चाहिये कि दिल जमई के साथ दुआ करे, तमाम गमों और फ़िकरों को मुज्तमआ कर ले यानी अपनी हाजत बारगाहे इलाही में पेश करे, कमज़ोरी व ज़िल्लत का इज़हार करे, अल्लाह अज़्वजल से अच्छी उम्मीद रखे, आजज़ी व इनकेसारी के साथ दुआ करे, गुरबत व मुहताजी दूर करने का सवाल करे, डूबने वाले की सी कैफियत तारी करे, बकदरे इस्तेताअते जाते बारी तआला की मआरफ़त हासिल करे, दुआ करते हुये अल्लाह अज़्वजल की अज़ीम इज़्ज़त व हुर्मत को पेशे नज़र रखे, उसकी बारगाह में तवज्जह करते हुये अपनी हथेलियाँ फैला दे, और दुआ कुबूल होने का यकीन रखे, और साथ ही साथ इस बात से खौफ़ज़दह भी हो कि कहीं नाकाम व नामुराद न लौटा दिया जाऊँ और खुशहाली का मुन्तज़िर रहे, दुआ करते हुये बाहमी दुश्मनी दिल से निकाल दें, रहमते खुदावन्दी की उम्मीद रखते हुये नेक नियती से दुआ करे, और दुआ के बाद हथेलियों को चेहरे पर फेर ले। (आदाबे दीन मुलख़बसन)

नमाज़ के बाद के अज़कार व दुआ:

नमाज़ के बाद जो अज़कार तवीलह अहादीस में वारिद हैं, वह जोहर व मगरिब व इशा में सुन्नतों के बाद पढ़े जायें कबले सुन्नत मुख़तसर दुआ पर

कनाअत करनी चाहिए, वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जायेगा। (रद्दुल मुहत्तार)

ज़रूरी हेदायत:

अहदीस में किसी दुआ की निसबत जो तआदाद वारिद है उससे कम या ज़्यादा न करे, कि जो फ़ज़ायल इन अज़कार के लिये हैं वह उसी अ़दद के साथ मख़सूस हैं, उनमें कम या ज़्यादा करने की मिसाल यह है कि कोई कुफ़ल (ताला) किसी ख़ास की कुन्जी से खुलता है, अब अगर कुन्जी में दन्दाने कम या ज़ायद कर दें तो उससे न खुलेगा, अल्बत्तह अगर शुमार में शक वाके हो तो ज़्यादा कर सकता है और यह ज़्यादात नहीं, बल्कि इत्माह है। (रद्दुल मुहत्तार)

हर नमाज़ के बाद तीन बार इस्तग़फ़ार करे और آية الكرسي 33 बार, سُبْحَانَ اللَّهِ 33 बार, اللَّهُ أَكْبَرُ 34 बार और

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

एक बार पढ़े। जो शख़्त इस तरह पढ़ेगा उसके तमाम गुनाह बख़्त दिये जायेंगे, अगरचह समन्दर के झाग के बराबर हों।

और अ़सर व फ़जर के बाद बग़ैर पाँव बदले, बग़ैर कलाम किये

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، بِيَدِهِ الْخَيْرُ،

يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

दस-दस बार पढ़े, बाद हर नमाज़ पेशानी यानी सर के अगले हिस्सह पर हाथ रखकर पढ़े:

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ، اللَّهُمَّ أَذْهِبْ عَنِّي الْهَمَّ

وَالْحُزْنَ.

और हाथ खींचकर माथे तक लाये। (बहारे शरीअत हिस्सा सोम)

हज़रत अनस रज़ीअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: नमाज़ फ़जर के बाद तोलूअ आफ़ताब तक और अ़सर के बाद गुरुब तक ज़िक्र करना, इससे बेहतर है कि चार-चार गुलाम बनी इस्माईल से आज़ाद किये जायें। (अबू दाऊद शरीफ़ हदीस नं० 3667)

हज़रते इब्ने उमर रज़ीअल्लाहो तआला अन्होमा से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: नमाज़े जमाअत तनहा

पढ़ने से सत्ताइस दरजा बढ़कर है।

(बुखारी शरीफ बाबे फज़ले सलातुल जमाआ हदीस नं० 645, जीम अलिफ साद 232)

हज़रत उस्मान रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अनहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जिसने कामिल वजू किया, फिर नमाज़े फर्ज़ के लिये चला और इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी, उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। (सहीह इब्ने खुज़ैमा, हदीस नं० 1489, जीम 2 साद 373)

हज़रत अबू अमामह रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अनहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया: अगर नमाज़े जमाअत से पीछे रह जाने वाला यह जानता कि उस जाने वाले के लिए कितना अजर व सवाब है? तो घसीटता हुआ हाज़िर होता। (अल-मोअजमुल कबीर, हदीस नं० 7886, जि० 8, स० 224)

हज़रत अनस रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अनहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया: जो शख़्स अल्लाह के लिए चालीस दिन बाजमाअत नमाज़ पढ़े और तकबीरे ऊला पाए, उसके लिए दो आज़ादियाँ लिख दी जायेंगी, एक नार से दूसरे नेफ़ाक़ से। (तिरमिज़ी शरीफ़ बाबे माजा फी फज़लुल तकबीरतुल ऊला हदीस नं० 241, जि० 1, स० 274)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अनहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जो शख़्स चालीस रातें मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़े कि इशा की तकबीरे ऊला फौत न हो, अल्लाह तअ़ाला उसके लिए दोज़ख़ से आज़ादी लिख देगा। (सोनन इब्ने माजह बाब सलातुल इशा वल फज़रे फी जमाअत, हदीस नं० 798, जि० 1, स० 437)

जुमा के आदाब:

नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिए कि वक़्त शुरु होने से पहले जुमा की तैयारी शुरु कर दे, नमाज़े जुमा हाज़री के लिए सवेरे-सवेरे तह़ारत करे कि जिसम को धोए, कपड़ों की पाकीज़गी व सफ़ाई का एहतेमाम करे, खुशबू वगैरह लगाए, लोगों की गर्दन न फ़लाँगे, बल्कि जहाँ जगह मिले बैठ जाए, गुफ़्तगू कम करे, कसरत से अल्लाह अज़्जल का ज़िक्र करे, इमाम के क़रीब होकर बैठे, ख़तीब के हुक्म की तामील करे, इल्म हासिल करने के लिए हाज़िर हो, पुर वक़ार और पुर सुकून होकर चले, उंगलियाँ न चटकाये, चलते हुए छोटे-छोटे क़दम रखे, खामोशी

की आदत अपनाए, कसरत से अपने खालिक व राजिक अज्वजल का शुक्र बजा लाये, आजजी व इनकसारी करते हुए मस्जिद में दाखिल हो, सलाम का जवाब दे, खतीब के मिमबर पर बैठ जाने के बाद नमाज़ वगैरह न पढ़े, गुफतगू वगैरह बन्द करे, नसीहत कुबूल करने का पुख़ता इरादह करे, खतीब के सामने और उसके बयान करते वक़्त इधर-उधर न देखे, जब तक खतीब मिमबर से न उतरे, और मोअज़ज़िन अक़ामत से फ़ारिग़ न हो ले उस वक़्त तक नमाज़ के लिए खड़ा न हो, यानी अक़ामत से पहले खड़ा न हों। (आदाबे दीन मुलख़ब्रसन)

नमाज़े इस्तेख़ारा:

हदीस सहीह जिसको मुस्लिम के सेवा जमाअत मोहदूदेसीन ने हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अनहोमा से रवायत किया है वह फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हमको तमाम ओमूर में इस्तेख़ारा की तालीम फ़रमाते, जैसे कुरआन की सूरात तालीम फ़रमाते थे। वह फ़रमाते हैं: जब कोई किसी अमूर का क़सद करे तो दो रकअत नपल पढ़े, फिर कहे:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي أَوْ قَالَ عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ فَاقْدِرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي أَوْ قَالَ عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدِرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ.

और अपनी हाजत का ज़िक्र करे, ख्वाह बजाये अमूर के हाजत का नाम ले या उसके बाद। (रददुल मुहतार)

“أَوْ” शक रावी है, फोक़हा फ़रमाते हैं कि जमा करे यानी यूँ कहे: وَعَاقِبَةِ أَمْرِي وَعَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ.

मुस्तहब ये है कि इस दुआ के अव्वल आखिर اللهُ और दुसुद शरीफ़ पढ़े और पहली रकअत में قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ और दूसरी में قُلْ هُوَ اللهُ الَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ” पहली में “وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ أَنْ يَأْتِيَا بِكَلِمَةٍ كَلِمَتَيْنِ يَنْتَازَا” तक और दूसरी में “وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ أَنْ يَأْتِيَا بِكَلِمَةٍ كَلِمَتَيْنِ يَنْتَازَا” तक भी पढ़े। (रददुल मुहतार)

बआज़ मशायख से मनकूल है कि दुआए मज़कूर पढ़कर बातहारत किब्ला रु सो रहे, अगर ख़्वाब में सपेदी या सब्ज़ी देखे तो वह काम बेहतर है और स्याही या सुर्खी देखे तो बुरा है उससे बचे। (रद्दुल मुह्तार)

इस्तेखारा का वक्त उस वक्त तक है कि एक तरफ़ राय पूरी जम न चुकी हो।

सलातुत्तस्बीहः

इस नमाज़ में बेइन्तेहा सवाब है बआज़ मोहक्केकीन फरमाते हैं : इसकी बुजुर्गी सुनकर तर्क न करेगा, मगर दीन में सुस्ती करने वाला। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ीअल्लाहो तआला अनहो से फरमाया: ऐ चचा! क्या मैं तुमको अता न करूँ? क्या मैं तुमको बख़्शिश न करूँ? क्या मैं तुमको न दूँ? क्या तुम्हारे साथ एहसान न करूँ?

दस ख़सलतें हैं कि जब तुम करो तो अल्लाह तआला तुम्हारा हर गुनाह बख़्श देगा, अगला, पिछला, पुराना, नया, जो भूलकर किया, और जो कसदन किया, छोटा और बड़ा, पोशीदा और ज़ाहिर सब बख़्श देगा। उसके बाद सलातुत्तस्बीह की तरकीब बताई, फिर फरमाया: कि अगर तुमसे हो सके तो हर रोज़ एक बार पढ़ा करो, और अगर रोज़ न करो तो हर जुमा में एक बार, और यह भी न करो तो हर महीने में एक बार, और यह भी न करो तो साल में एक बार, और यह भी न करो तो उम्र में एक बार।

उसकी तरकीब हमारे तौर पर वह है जो सोनन तिरमिज़ी शरीफ़ में बरवायत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ीअल्लाहो तआला अनहो मज़कूर है, फरमाते हैं: الله اكبر

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ.

पढ़े फिर यह पढ़े

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ.

पन्द्रह बार, फिर सूरत और الْحَمْدُ और بِسْمِ اللَّهِ और أَعُوذُ بِاللَّهِ और सूरत पढ़कर दस बार यही तस्बीह पढ़े, फिर रुकूअ करे, और रुकूअ में दस बार पढ़े, फिर रुकूअ से सर उठाये और बाद تسميع و تحميد दस बार कहे, फिर सजदा करे, और इसमें दस मरतबा पढ़े, फिर सजदा से सर उठा कर दस बार कहे फिर

सजदा करे और दस बार पढ़े यूँ ही चार रकअत पढ़े, हर रकअत में ७५ बार तस्बीह हुई और चार में तीन सौ बार हुई, और रुकूअ व सुजूद में **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى** कहने के बाद तस्बीहात पढ़े। (गुनीयह वगैरह)

इन्ने अब्बास रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहोमा से पूछा गया कि आपको मालूम है इस नमाज़ में कौन सूरत पढ़ी जाए? फरमाया: सूरह तकासुर **والعصر** और **حَدِيد** और **أَمْرٌ بِاللَّيْلِ** और **قُلْ هُوَ اللَّهُ** और **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** और **تغابن** और **صف** और **حشر** (रददुल मुहतार)

नमाज़े हाजत:

हज़रत होज़ैफ़ा रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है वह कहते हैं: जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को कोई अहम अमूर पेश आता तो नमाज़ पढ़ते। इसके लिए दो या चार रकअत पढ़े। हदीस में है: पहली रकअत में सूरह फ़ातेहा और तीन बार आयतल कुरसी पढ़े और बाकी तीन रकअतों में सूरह फ़ातेहा और **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ** और **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ** और **قُلْ هُوَ اللَّهُ** एक-एक बार पढ़े। तो यह ऐसे हैं जैसे शबे क़द्र में चार रकअतें पढ़ीं। मशायख़ फ़रमाते हैं: कि हमने यह नमाज़ पढ़ी और हमारी हाजतें पूरी हुईं।

एक हदीस में है कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम फ़रमाते हैं: जिसकी कोई हाजत अल्लाह अज़्जल की तरफ़ हो, या किसी इंसान की तरफ़ तो अच्छी तरह वजू करे, फिर दो रकअत नमाज़ पढ़कर अल्लाह अज़्जल की सना करे और नबी सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम पर दुरुद भेजे, फिर यह पढ़े:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ، سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ، لَا تَدْعُ لِي ذُنُوبًا إِلَّا عَفْوَتَهُ وَلَا هَمًّا إِلَّا فَرَجَتَهُ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है कि एक नाबीना सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ की: अल्लाह अज़्जल से दुआ कीजिए कि मुझे आफ़ियत दे। सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इरशाद फरमाया: अगर तू चाहे तो दुआ

करूँ, और चाहे तो सब्र कर, और यह तेरे लिए बेहतर है। उन्होंने अर्ज की: हुजूर दुआ करें। सरकार ने उन्हें हुक्म फरमाया: कि वजू करो और अच्छा वजू करो और दो रकअत नमाज़ पढ़कर यह दुआ पढ़ो।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ وَأَتَوَسَّلُ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ . يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي تَوَجَّهْتُ بِكَ إِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَذِهِ لِتَقْضَى لِي اللَّهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِي .

हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो फ़रमाते हैं: खुदा की क़सम! हम उठने भी न पाये थे बातें ही कर रहे थे कि वह हमारे पास आये, गोया कभी अन्धे थे ही नहीं।

क़ज़ाए हाज़त के लिए एक मोज़रब नमाज़ जो ओलमा हमेशा से पढ़ते आये हैं, यह है कि इमामे आज़म रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो के मज़ारे मुबारक पर जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़े और इमाम के वसीलह से अल्लाह अ़ज्वजल से सवाल करे, इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं: कि मैं ऐसा करता हूँ तो बहुत जल्द मेरी हाज़त पूरी हो जाती है। (ख़ैरातुल हस्सान)

सलातुल असरार:

इसके लिए एक मोज़रब नमाज़ सलातुल असरा भी है। इसकी तरकीब यह है कि बाद नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़कर दो रकअत नमाज़े नफ़ल पढ़े और बेहतर यह है कि الحمد के बाद हर रकअत में ग्यारह-ग्यारह बार الله قل पढ़े, सलाम के बाद अल्लाह अ़ज्वजल की हम्द व सना करे फिर नबी सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम पर ग्यारह बार दुरुद व सलाम अर्ज करे और ग्यारह बार यह कहे:

يَا رَسُولَ اللَّهِ! يَا نَبِيَّ اللَّهِ! اغْنِنِي وَاْمُدُّنِي فِي قَضَاءِ حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ .

फिर इराक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले, हर क़दम पर यह कहे:

يَا عَوْثَ الثَّقَلَيْنِ! وَ يَا كَرِيمَ الطَّرَفَيْنِ! اغْنِنِي وَاْمُدُّنِي فِي قَضَاءِ

حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ .

फिर हुजूर के तवस्सुल से अल्लाह अ़ज्वजल से दुआ करे।

नमाज़े तौबा:

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबकर रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब

कोई बन्दह गुनाह करे फिर वजू करके नमाज़ पढ़े फिर استغفار करे, अल्लाह तआला उसके गुनाह बख़्श देगा। फिर यह आयत पढ़ी:

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا
لِدُنُوبِهِمْ قَفَّ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ قَفَّ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ
يَعْلَمُونَ۔ (पारह ४, آل عمران ३, آیت १३५)

तरजुमा:

और वह कि जब कोई बेहयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की मआफी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सेवा अल्लाह के और अपने किए पर जान बूझकर अड़ न जायें। (कन्जुल ईमान)

नमाज़े जनाज़ह पढ़ने का तरीका:

नमाज़े जनाज़ह पढ़ने का तरीका यह है कि पहले नीयत करे (नीयत की मैंने नमाज़े जनाज़ह की चार तकबीरों के साथ अल्लाह तआला के लिए, दुआ इस मैय्यत के लिए, मुँह मेरा कआबा शरीफ़ की तरफ़) फिर कानों तक हाथ उठाकर **अक़ि़र** **अक़ि़र** कहता हुआ हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे हस्बे दस्तूर बाँध ले, और सना पढ़े,:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَىٰ جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ.

फिर बगैर हाथ उठाए **अक़ि़र** **अक़ि़र** कहे, और दुरुद शरीफ़ पढ़े, बेहतर वह दुरुद है जो नमाज़ में पढ़ा जाता है, अगर कोई दूसरा दुरुद पढ़े जब भी हर्ज नहीं, फिर **अक़ि़र** **अक़ि़र** कहकर अपने और मैय्यत और तमाम मोमिनीन व मोमिनात के लिए दुआ करे, यानी नमाज़े जनाज़ह की दुआ पढ़े। (जोहरह नैयरह, आलमगीरी, दुर्रे मुख्तार वगैरहा)

नमाज़े जनाज़ह की दुआ:

मर्द का जनाज़ह हो तो यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيَاتِنَا وَمَمَاتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا وَذَكَرِنَا
وَأُنْتَانَا، اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَىٰ الْإِسْلَامِ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَىٰ
الْإِيمَانِ، اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلَا تَفْتِنْنَا بَعْدَهُ.

अगर औरत का जनाज़ह हो तो उस दुआ में (أَجْرَهُ) की जगह (بَعْدَهَا) और (بَعْدَهُ) की जगह (أَجْرَهَا) कहे।

अगर जनाज़ह किसी नाबालिग बच्चे का हो तो तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهُ لَنَا دُخْرًا وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَمُشَفَّعًا.

अगर जनाज़ह किसी नाबालिग बच्ची का हो तो तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهَا لَنَا دُخْرًا وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَشَافِعَةً. (जोहरे निरे)

जनाज़ह के साथ चलने के आदाब:

जनाज़ह के साथ जाने वाले को चाहिए कि हमेशा दिल में अल्लाह अज़्वजल का खौफ़ रखे, निगाहें नीची रखे, गुफ़्तगू वगैरह न करे, इब्रत की निगाह से मैय्यत को देखे, क़ब्र के सवाल व जवाब में गौर व फिक्र करे, जिस चीज़ के मोतालबा का खौफ़ करता है कि उसके बारे में सवाल होगा। पुख़्तह इरादे के साथ उसे बजा लाने में जल्दी करे, मौत के अचानक हमले के वक़्त तारी होने वाली हसरत व नेदामत से डरे। (आदाबे दीन मुलख़सा)

तआज़ियत करने वाले के आदाब:

तआज़ियत करने वाले को चाहिए कि आजज़ी व इन्केसारी और रन्ज व ग़म का इज़हार करे, गुफ़्तगू कम करे और मुस्कराने से बचे, कि ऐसे मौकों पर मुस्कराना दिलों में बुग़ज़ व कीना पैदा करता है। (आदाबे दीन मुलख़सा)

रोज़े का बयान:

इस्लाम के बुनियादी अरकान में से रोज़ह भी है। रोज़े के बारे में परवरदेगारे अलम इरशद फ़रमाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾ أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۗ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ ۗ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ

لَهُ ۚ وَ أَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۳۰﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ
 الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَ الْفُرْقَانِ ۗ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
 فَلْيَصُمْهُ ۗ وَ مَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَ
 لَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۗ وَ لَتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لَتُكْبِرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿۳۱﴾
 وَ إِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۗ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَ
 لِيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿۳۲﴾ أَحَلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۗ هُنَّ
 لِبَاسٌ لَّكُمْ وَ أَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَلَتُونَ أُنفُسَكُمْ فَتَابَ
 عَلَيْكُمْ وَ عَفَا عَنْكُمْ ۗ فَالَّذِينَ بَاشَرُوا هُنَّ وَ ابْتَغَوْا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَ كَلُوا وَ اشْرَبُوا حَتَّىٰ
 يَبْتَئِنَ لَكُمْ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۗ ثُمَّ أَتَمُوا الصِّيَامَ إِلَىٰ الْاَيْلِ ۗ
 وَ لَا تَبَاشَرُوا هُنَّ وَ أَنْتُمْ عَاكِفُونَ ۗ فِي الْمَسْجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۗ كَذَلِكَ
 يُبَيِّنُ اللَّهُ لِيَتِهِ لِّلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿۳۳﴾

तरजुमा:

ऐ ईमान वालों! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले, गिनती के दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इसकी ताकत न हो वह बदला दें एक मिस्कीन का खाना, फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़्यादाह करे तो वह उसके लिए बेहतर है और रोज़ह रखना तुम्हारे लिए ज़्यादाह भला है अगर तुम जानो, रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतरा लोगों के लिए हिदायत और रहनोमाई और फैसलह की रौशन बातें तो तुम में जो कोई यह महीना पाये ज़रूर इसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में, अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता, और इसलिए कि तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बोलो उस पर कि उसने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम हक़गुज़ार हो, और ऐ महबूब! जब तुमसे मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूँ, दुआ कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की, जब मुझे पुकारे तो उन्हें चाहिए मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएँ कि कहीं राह पायें।

रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिए हलाल हुआ, वह तुम्हारा लेबास हैं और तुम उनके लेबास, अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़्यानत में डालते थे तो उसने तुम्हारी तौबा कुबूल की और तुम्हें मआफ़ फरमाया, तो अब उनसे सुहबत करो और त़लब करो जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो, और खाओ-पीओ यहाँ तक कि तुम्हारे लिए ज़ाहिर हो जाये सफेदी का डोरा स्याही के डोरे से (पै फटकर) फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो, और औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में एतकाफ़ से हो, यह अल्लाह की हदें हैं उनके पास न जाओ, अल्लाह यूँ ही ब्यान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़गारी मिले। (कन्जुल ईमान)

माहे रमज़ान की फ़ज़ीलत:

इमामे अहमद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह की रवायत में है, जब माहे रमज़ान की पहली रात होती है तो श्यातीन और सरकश जिन कैद कर लिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं तो उनमें से कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता, और जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं तो उनमें से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और मोनादी पुकारता है: ऐ ख़ैर त़लब करने वाले! मोतवज्जह हो, और ऐ शर के चाहने वाले! बाज़ रह, और कुछ लोग जहन्नम से आज़ाद होते हैं, और यह हर रात में होता है। (सोनन तिरमिज़ी, बाबे माजाअ फ़ी फ़ज़ले शहर रमज़ान, हदीस नं० 682, जीम 2, सफ़हा 155)

इमाम अहमद व नेसाई की दूसरी रवायत में है, कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया: रमज़ान आया, यह बरकत का महीना है, अल्लाह तआला ने इसके रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये, इसमें आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं, और सरकश शैतानों के तौक़ डाल दिए जाते हैं, और उसमें एक रात ऐसी जो हज़ारों महीनों से बेहतर है, जो इसकी भलाई से मह़रुम रहा, वह बेशक मह़रुम है। (सोनन नेसाई, बाबे ज़िकरे इख़्तेलाफ़ अला मोअम्मर फ़ीह, हदीस नं० 2103, सफ़हा 355)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने शाबान के आख़री दिन में वआज़ फरमाया। फरमाया: ऐ लोगो! तुम्हारे पास अज़मत वाला, बरकत वाला

महीना आया, वह महीना जिसमें एक रात हजार महीनों से बेहतर है, उसके रोज़े अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ किए, जो इसमें नेकी का कोई काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया, और इसमें जिसने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर (70) फ़र्ज़ अदा किए।

यह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और यह महीना मवासात का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क बढ़ाया जाता है, जो इस महीने में रोज़हदार को अफ़तार कराएँ, उसके गुनाहों के लिए मग़फ़ेरत है और उसकी गरदन आग से आज़ाद कर दी जायेगी, और उस अफ़तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ह रखने वाले को मिलेगा, बग़ैर उसके कि उसके अज़र में कुछ कम हो।

हमने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह! हम में का हर शख्स वह चीज़ नहीं पाता जिससे रोज़ह अफ़तार कराए, हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला यह सवाब उस शख्स को देगा जो एक घूँट दूध या एक खुरमा या एक घूँट पानी से रोज़ह अफ़तार कराए और जिसने रोज़हदार को भरपेट खाना खिलाया, उसको अल्लाह तआला मेरे हौज़ से पिलायेगा कि कभी प्यासा न होगा यहाँ तक कि वह जन्नत में दाखिल हो जाए।

यह वह महीना है कि इसका अव्वल रहमत है और इसका औसत मग़फ़ेरत है और इसका आखिर जहन्नम से आज़ादी है, जो अपने गुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे यानी काम में कमी करे, अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा। (शोबल ईमान, फ़ज़ायल शहरे रमज़ान, मुलख़़सस, हदीस नं० 3608, जिल्द 3, सफ़हा 305)

रोज़ह और उसके दरजे:

मुसलमान का बनियत ईबादत सुबहे सादिक़ से ग़ोरुबे आफ़ताब तक अपने को क़सदन खाने-पीने जेमाअ से बाज़ रखने का नाम उर्फ़े शरअ में रोज़ह है। (आमह कुतुब)

रोज़े के तीन दरजे हैं:

(1) आम लोगों का रोज़ह: यानी पेट और शर्मगाह को खाने-पीने

जेमाअ से रोकना।

(2) ख़वास का रोज़ह: यानी उनके अलावह कान, आँख, जुबान, हाथ पाँव और तमाम आज़ा को गुनाह से बाज़ रखना।

(3) ख़ासुल ख़ास का रोज़ह: यानी जमीअ मासिवा अल्लाह से अपने को बिलकुल्लियह जुदा करके सिर्फ उसी की तरफ मोतवज्जह रहना। (जोहरह नैय्यरह)

रोज़े के आदाब:

रोज़हदार पाक व हलाल ग़ज़ा खाए और लज़ीज़ खाने छोड़ दे, ग़ीबत व झूट से इत्तेनाब करे, दूसरों को तकलीफ़ न दे और आज़ा को बुराइयों से बचाए। (आदाबे दीन मुलख़ब्रसन)

रोज़ह की नीयत:

नीयत दिल के इरादह का नाम है ज़बान से कहना शर्त नहीं। यहाँ भी वही मुराद है, मगर ज़बान से कह लेना मुस्तहब है, अगर रात में नीयत करे तो यूँ कहे:

نَوَيْتُ أَنْ أَصُومَ عَدَا اللَّهِ تَعَالَى مِنْ فَرَضٍ رَمَضَانَ هَذَا.

यानी मैंने नीयत की कि अल्लाह तआला के लिए इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ह कल रखूँगा।

نَوَيْتُ أَنْ أَصُومَ هَذَا الْيَوْمَ لِلَّهِ تَعَالَى مِنْ فَرَضٍ رَمَضَانَ .

और अगर दिन में नीयत करे तो यह कहे यानी मैंने नीयत की कि अल्लाह तआला के लिए आज रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ह रखूँगा।

सेहरी व अफ़तार:

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया: सेहरी कुल की कुल बरकत है उसे न छोड़ना, अगरचह एक घूँट पानी ही पी ले क्योंकि सेहरी खाने वालों पर अल्लाह अज़्वजल और उसके फ़रिश्ते दुरुद भेजते हैं। (मुसनद इमाम अहमद बिन हम्बल, मुसनद अबी सईद अल ख़ुदरी हदीस नं० 11086, जिल्द 4, सफ़हा 26)

हज़रत सहल बिन सआद रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया: हमेशा

लोग ख़ैर के साथ रहेंगे, जब तक अफ़तार में जलदी करेंगे। (बुख़ारी शरीफ़, बाबे तआजीलिल अफ़तार, हदीस नं० 1957, जिल्द 1, सफ़हा 645)

हज़रत अनस रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम नमाज़ से पहले तर खजूरों से रोज़ह अफ़तार फ़रमाते, तर खजूरें न होतीं तो चन्द खुश्क खजूरों से और अगर यह भी न होतीं तो चन्द चुल्लू पानी पीते। (सुनन तिरमिज़ी, बाबे माजाअ़ मायस्तहिब अ़लैहिल अफ़तार, हदीस नं० 696, जिल्द 2, सफ़हा 162)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने हलाल खाने या पानी से रोज़ह अफ़तार कराया, फ़रिश्ते माहे रमज़ान के औकात में उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और जिबरईल अ़लैहिस्सलाम शबे क़द्र में उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं।

दुआए अफ़तार:

अबू दाऊद ने रवायत की, कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम अफ़तार के वक़्त यह दुआ पढ़ते: **اللَّهُمَّ لَكَ صُومْتُ وَ عَلَى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ.** (सुनन अबी दाऊद, बाबुल कौल ईन्दल अफ़तार, हदीस नं० 2358, जिल्द 2, सफ़हा 447)

एतकाफ़:

मस्जिद में अल्लाह अ़ज्वजल के लिए नीयत के साथ ठहरना एतकाफ़ और इसके लिए मुसलमान, अ़क़िल और जनाबत व हैज़ व नफ़ास से पाक होना शर्त है। बुलूग़ शर्त नहीं, बल्कि नाबालिग़ जो तमीज़ रखता है अगर बनीयत एतकाफ़ मस्जिद में ठहरे तो यह एतकाफ़ सही है। (आलमगीरी, दुर्रे मुख़तार, रददुल मुहतार)

मस्जिद जामअ़ा होना एतकाफ़ के लिये शर्त नहीं बल्कि मस्जिद जमाअ़त में भी हो सकता है। मस्जिद जमाअ़त वह है जिसमें इमाम व मोअज़्ज़िन मोकरर हों, अगरचह इसमें पन्जगाना जमाअ़त न होती हो और आसानी इसमें है कि मुतलक़न हर मस्जिद में एतकाफ़ सही है अगरचह वह मस्जिद जमाअ़त न हो, ख़ोसूसन इस ज़मानह में कि बहुत सी मस्जिदें ऐसी हैं

जिनमें न इमाम हैं न मोअज़िज़न। (रद्दुल मुह्तार)

सुन्नते मोअक्कदह, कि रमज़ान के पूरे अशरह अखीरह यानी आख़िर के दस दिन में एतकाफ़ किया जाये, यानी बीसवीं रमज़ान को सूरज डूबते वक़्त बनीयत एतकाफ़ मस्जिद में हो और तीसवीं के गुरुब के बाद या उन्तीस को चाँद होने के बाद निकले, अगर बीसवीं तारीख़ को बाद नमाज़े मग़रिब नीयत एतकाफ़ की तो सुन्नते मोअक्कदह अदा न हुई।

यह एतकाफ़ सुन्नते कफ़ायह है कि अगर सब तर्क करें तो सबसे मोतालबह होगा और शहर में एक ने कर लिया तो सब बरीउज़्जिम्मा हो गए।

(बहारे शरीअत हिस्सा पन्जुम मुलख़सा)

एतकाफ़ के आदाब:

एतकाफ़ करने वाले को चाहिए कि हमेशा ज़िक्र में मशगूल रहे, अपने गर्मों और फ़िक्रों को मुज्तमआ कर ले यानी दुनियवी ख़्यालात में मशगूल न हो फुजूलगोई न करे, खुशूअ व खुजूअ हासिल करने के लिए एक जगह मख़सूस कर ले, और इधर-उधर नक़ल व हरकत न करे, नफ़्स को उसकी ख़्वाहिशात और पसन्दीदह चीज़ों से रोक कर उसे अल्लाह तबारक व तआला की अताअत व इबादत पर मजबूर करे। (आदाबे दीन मुलख़सन)

ज़कात का बयान:

ज़कात शरीअत में अल्लाह अज़्वजल के लिए माल के एक हिस्सह को जो शरअ ने मोकरर किया है, मुसलमान फ़कीर को मालिक कर देना है, और अपना नफ़आ उससे बिल्कुल जुदा कर ले। (दुरें मुख़्तार)

ज़कात फ़र्ज़ है, इसका मुन्किर काफ़िर, और न देने वाला फ़ासिक और क़त्ल का मुस्तहिक़, और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनहगार व मरदूदुश्शहादह है। (आलमगीरी)

मोबाह कर देने से ज़कात अदा न होगी, मसलन फ़कीर को बनियत ज़कात खाना खिला दिया, ज़कात अदा न हुई कि मालिक कर देना नहीं पाया गया। हाँ अगर खाना दे दिया कि चाहे खाये या ले जाये तो अदा हो गई। यूँ ही बनियत ज़कात फ़कीर को कपड़ा दे दिया या पहना दिया अदा हो गई। (दुरें मुख़्तार)

ज़कात न देने का अज़ाब: (कुरआन की रोशनी में)

ज़कात न देने वालों के बारे में कुरआन करीम में है:

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ ط
 بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ط سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ
 وَالْأَرْضِ ط وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ع. (पार २, सूर २, आल عمران ३, आیت १८०)

तर्जुमा:

और जो बुखल करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फज़ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिए अच्छा न समझें, बल्कि वह उनके लिए बुरा है, अनक़रीब वह जिसमें बुखल किया था क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ होगा, और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का, और अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है। (कन्जुल ईमान)

وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا
 فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ لَا يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارٍ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ
 وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ط هَذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ.
 (पार १०, التوبة ९, आیت ३४, ३५)

तर्जुमा:

और वह कि जोड़कर रखते हैं सोना और चाँदी और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते (ज़कात नहीं देते) उन्हें खुशखबरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की, जिस दिन वह तपाया जायेगा जहन्नम की आग में, फिर उससे दारंगे उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें, यह है वह जो तुमने अपने लिए जोड़कर रखा था, अब चखो मज़ा उस जोड़ने का। (कन्जुल ईमान)

ज़कात न देने का अज़ाब: (अह़ादीस की रोशनी में)

ज़कात न देने वालों के बारे में अह़ादीस में बहुत शदीद वईदें वारिद हैं, उनमें से बआज़ दर्ज ज़ेल हैं:

* हज़रत अबू होरैरह रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अ़नहो से मरवी है कि

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तअ़ाला अ़लैहे वसल्लम ने इश़्ाद फ़रमाया: जिसको अल्लाह तअ़ाला माल दे और वह उसकी ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वह माल गन्जे साँप की सूरत में कर दिया जायेगा जिसके सर पर दो चित्तियाँ होंगी।

वह साँप उसके गले में तौक बनाकर डाल दिया जायेगा, फिर उसकी बाछें पकड़ेगा और कहेगा: मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा खज़ाना हूँ। (बुखारी शरीफ़, बाबे ईसुम मानेईज़्ज़कात, हदीस नं० 1403, जिल्द 1, सफ़ह 474)

* हज़रत अबू हैरैरह रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अ़नहो से मरवी है कि सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया: जो शख़्स सोने-चाँदी का मालिक हो और उसका हक़ अदा न करे तो जब क़यामत का दिन होगा, उसके लिए आग के पत्तर बनाये जायेंगे, उन पर जहन्नम की आग भड़काई जायेगी और उनसे उसकी करवट और पेशानी और पीठ दागी जायेगी, जब ठण्डे होने पर आएँगे, फिर वैसे ही कर दिए जाएँगे, यह मोआमलह उस दिन का है जिसकी मिक्दार पचास हज़ार बरस है, यहाँ तक कि बन्दों के दरमियान फैसलह हो जाये, अब वह अपनी राह देखेगा ख़्वाह जन्नत की तरफ़ जाये या जहन्नम की तरफ़।

और ऊँट के बारे में फ़रमाया: जो उसका हक़ अदा नहीं करता, क़यामत के दिन हमवार मैदान में लेटा दिया जायेगा और वह ऊँट सब के सब नेहायत फ़रबह होकर आएँगे, पाँव से उसे रौदेंगे और मुँह से काटेंगे, जब उनकी पिछली जमाअ़त गुज़र जाएगी, पहली लौटेगी।

और गायों और बकरियों के बारे में इश़्ाद फ़रमाया: कि उस शख़्स को हमवार मैदान में लेटाएँगे और वह सबकी सब आएँगी, न उनमें मुड़े हुए सींग की कोई होगी न बे सींग की, न टूटे सींग की और सींगों से मारेगी और खुरों से रौदेंगी। (मुस्लिम शरीफ़, बाबे ईसुम मानेईज़्ज़कात, हदीस नं० 987, सफ़ह 491)

* अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अ़नहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तअ़ाला अ़लैहे वसल्लम ने इश़्ाद फ़रमाया: खुश्क़ी व तरी में जो माल तल्फ़ होता है, वह ज़कात न देने से तल्फ़ होता है। (अलतरगीब वल तरहीब, अलतरहीब मिन मानेईज़्ज़कात, हदीस नं० 16, जिल्द 1, सफ़ह 308)

* हज़रत अहज़नफ़ बिन कैस से मरवी है कि सैय्यदना अबूज़र रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अ़नहो ने फ़रमाया: उनके सर पिस्तान पर जहन्नम का

गरम पत्थर रखेंगे कि सीना तोड़कर शानह से निकलेगा और शानह की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियाँ तोड़ता सीने से निकलेगा। (मुस्लिम शरीफ़, बाबे फिल कनाज़ीन लिलअमवाल व अल तग़लीज़ अलैहिम, हदीस नं० 992, सफ़हा 497)

* और सहीह मुस्लिम शरीफ़ में यह भी है कि मैंने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को फ़रमाते सुना: कि पीठ तोड़कर करवट से निकलेगा और गुद्दी तोड़कर पेशानी से। (ऐज़ा)

ज़ेवरात की ज़कात:

तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि दो औरतें सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुईं, उनके हाथों में सोने के कँगन थे, सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? अर्ज़ की, नहीं!

सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया: तो क्या तुम उसे पसन्द करती हो कि अल्लाह तआला तुम्हें आग के कँगन पहनाए, अर्ज़ की नहीं, सरकार ने फ़रमाया: तो इसकी ज़कात अदा करो। (जामे अलतिरमिज़ी, बाबे माजाअ फी ज़कात अलहली, हदीस नं० 637, जिल्द 2, सफ़हा 132)

हज़रत असमा बिनते यज़ीद रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहा से मरवी है, वह कहती हैं: मैं और मेरी ख़ाला सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुईं और हमने सोने के कँगन पहने हुए थे।

सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: इसकी ज़कात देती हो, हमने अर्ज़ किया: नहीं। सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया: क्या डरती नहीं हो कि अल्लाह तआला तुम्हें आग के कँगन पहनाए? इसकी ज़कात अदा करो। (मुसनद इमामे अहमद बिन हम्बल हदीस नं० 27685, जिल्द 10, सफ़हा 446)

सोना-चाँदी जबकि बकद्रे नेसाब हों तो उनकी ज़कात चालीसवाँ हिस्सा है, ख़्वाह वह वैसे ही हों या उनके सिक्के जैसे रुपये, अशरफियाँ या उनकी कोई चीज़ बनी हुई हो ख़्वाह उसका इस्तेमाल जाएज़ हो जैसे औरत के लिए ज़ेवर, मर्द के लिए चाँदी की एक नग की एक अंगूठी साढ़े चार माशे से कम की, या सोने-चाँदी के बिला जंजीर के बटन, या इस्तेमाल नाजाएज़ हो जैसे

चाँदी-सोने के बर्तन, घड़ी, सुरमादानी, सलाई, कि इनका इस्तेमाल मर्द व औरत सबके लिए हुराम है, या मर्द के लिए सोने-चाँदी का छल्ला या ज़ेवर, या सोने की अंगूठी, या साढ़े चार माशे से ज़्यादाह चाँदी की अंगूठी, या चन्द अंगूठियाँ, या कई नग की एक अंगूठी। गर्ज जो कुछ हो सबकी ज़कात वाजिब है। (दुरें मुख्तार वगैरह)

खेती और फलों की ज़कात:

अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है:

وَأْتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ. (پاره ۸، الانعام ۶، آیت ۱۳۱)

तर्जुमा: खेती कटने के दिन उसका हक अदा करो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहोमा से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिस ज़मीन को आसमान या चश्मों ने सैराब किया, या उशरी हो, यानी नहर के पानी से उसे सैराब करते हों, उसमें उशूर है। और जिस ज़मीन के सैराब करने के लिए जानवर पर पानी लादकर लाते हों, उसमें निस्फ उशूर यानी बीसवाँ हिस्सा है। (सहीहल बुखारी, बाबे फिल उशूर अल्ख, हदीस नं० 1483, जिल्द 1, सफ़ह 501)

हज़रत अनस रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: हर उस शै में जिसे ज़मीन ने निकाला, उशूर या निस्फ उशूर है। (कन्जुल अमाल, ज़कातुल नबात वल फवाकह, हदीस नं० 15873, जिल्द 6, सफ़ह 140)

सदक़ए फ़ितूर का बयान:

हज़रत अनस रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया: बन्दह का रोज़ह आसमान व ज़मीन के दरमियान मोअल्लक रहता है, जब तक सदक़ए फ़ितूर अदा न करे।

(तारीखे बग़दाद, रकम: 4735, जिल्द 9, सफ़ह 122)

अबू दाऊद व नेसाई की रवायत में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहोमा ने आखिर रमज़ान में फ़रमाया: अपने रोज़े का सदक़ह अदा करो, इस सदक़ह को रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला

अलैहे वसल्लम ने मोकरर फरमाया: एक साअ खुरमा या जौ, या निस्फ साअ गेहूँ। (सुनन अबी दाऊद, किताबुज्जकात, हदीस नं० 1622, जिल्द 2, सफहा 161)

सदकह फितूर वाजिब है, उम्र भर इसका वक्त है यानी अगर अदा न किया हो तो अब अदा कर दे, अदा न करने से साकित न होगा, न अब अदा करना कज़ा है, बल्कि अब भी अदा ही है अगरचह मस्नून कब्ल नमाज़े ईद अदा कर देना है। (दुरे मुख्तार वगैरह)

ईद के दिन सुबह सादिक त़ोलूअ होते ही सदकह फितूर वाजिब होता है, लिहाज़ा जो शख्स सुबह होने से पहले मर गया, या ग़नी था फ़कीर हो गया, या सुबह त़ोलूअ होने के बाद काफ़िर मुसलमान हुआ, या बच्चा पैदा हुआ, या फ़कीर था ग़नी हो गया तो वाजिब न हुआ, और अगर सुबह त़ोलूअ होने के बाद मरा, या सुबह त़ोलूअ होने से पहले काफ़िर मुसलमान हुआ, या बच्चा पैदा हुआ, या फ़कीर था ग़नी हो गया तो वाजिब है। (आलमगीरी)

माँगना किसे हलाल है और किसे नहीं:

आजकल एक आम बला यह फैली हुई है कि अच्छे खासे तन्दुरुस्त हैं, चाहें तो कमाकर औरों को खिलायें, मगर उन्होंने अपने वजूद को बेकार करार दे रखा है, कौन मेहनत करे, मोसीबत झेले, बेमोशक़त जो मिल जाये तो तकलीफ क्यों बर्दाश्त करे, नाजाएज़ तौर पर सवाल करते और भीख माँग कर पेट भरते हैं।

और बहुत से ऐसे हैं कि मज़दूरी तो मज़दूरी, छोटी-मोटी तेजारत को नंग व आर ख़्याल करते हैं और भीख माँगना कि हकीक़तन ऐसों के लिए बेइज़्ज़ती व बेग़ैरती है सरमायए इज़्ज़त जानते हैं और बहुत से लोगों ने तो भीख माँगना अपना पेशा ही बना रखा है, घर में हज़ारों रुपये हैं सूद का लेन-देन करते, ज़राअत वगैरह करते हैं, मगर भीख माँगना नहीं छोड़ते, उनसे कहा जाता है तो जवाब देते हैं: यहा हमारा पेशा है, वाह साहब वाह! क्या हम अपना पेशा छोड़ दें? हालाँकि ऐसों को सवाल हराम है और जिसे उनकी हालत मालूम हो, उसे जाएज़ नहीं कि उनको दे। (बहारे शरीअत हिस्सा 5 मुलख़़सन)

सदकह व ख़ैरात के आदाब:

सदकह व ख़ैरात करने वाले को चाहिए कि सदकह वगैरह का सवाल

करने से पहले ही सदकह कर दे, अगर कोई चीज़ देने का वादा किया हो तो उसे पूरा करने में जल्दी करे, देते वक्त फराख़दिली से काम ले, छिपाकर सदकह करे और देने के बाद एहसान न जतलाए, ख़ैरात वगैरह करने पर हमेशगी इख़्तियार करे और सदकह व ख़ैरात का सिलसिला जारी व सारी रखे।

(आदाबे दीन मुलख़बसन)

सदकह देने वाले के आदाब:

सदकह करने वाले को चाहिए कि सवाल करने से पहले सदकह कर दे, खुफिया तौर पर सदकह दे और देने के बाद भी उसे छिपाये, सवाल करने वाले के साथ नरमी से पेश आये, उसके माँगने से पहले उसे जवाब न दे, उसके मोतअल्लिक वसवसों का शिकार न हो कि न जाने क्यों माँग रहा है? क्या मजबूरी है? वगैरह-वगैरह, अपने नफ़्स को बख़ल से रोके, सायल ने जिस चीज़ का सवाल किया है उसे वह चीज़ अ़ता कर दे, या अच्छे तरीके से उसे लौटा दे। (आदाबे दीन मुलख़बसन)

ग़नी के आदाब:

साहबे सरवत को चाहिए कि आजज़ी व इनकेसारी की आदत अपनाए, तकबुर से बचे, हमेशा अल्लाह अज़्जल का शुक्र अदा करे, नेक आमाल की तरफ़ रग़बत करे, फ़कीर के साथ हुस्ने अख़्लाक से पेश आए और दिल खोलकर उसकी मदद करे, हर किसी के सलाम का जवाब दे, क़नाअत पसन्दी का इज़हार करे, अच्छी गुफतगू करे, खुश उसलूबी से लोगों को अपने साथ मानूस करे और सदकह व ख़ैरात के ज़रिए उनकी मदद करे। (आदाबे दीन मुलख़सा)

हज़ का बयान:

इस्लाम के बुनियादी अरकान में से एक बड़ा रुक्न हज़ भी है, इसकी फ़र्ज़ियत के तअल्लुक से खुदाए वहदहु लाशरीक इरशाद फ़रमाता है:

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ مِّنْ بَيِّنَاتٍ مَّفَآئِمٍ يُرْهِمُ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۗ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حُجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ . (پاره ۴، آل عمران ۳، آیت ۹۶، ۹۷)

तर्जुमा: बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मोकर्र

हुआ, वह है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा, उसमें खुली निशानियाँ हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह, और जो इसमें आए अमान में हो, और अल्लाह के लिए लोगों पर उस घर का हज करना है, जो उस तक चल सके, और जो मुन्किर हो तो अल्लाह सारे जहान से बेपरवाह है। (कन्जुल ईमान)

और फ़रमाता है:

وَآتُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ط (پاره ۲، البقره آیت ۲۹۶)

तर्जुमा: और हज और उमरह अल्लाह के लिए पूरा करो। (कन्जुल ईमान)

हज़रत अबू होरैरह रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने खुतबह पढ़ा और फ़रमाया: ऐ लोगो! तुम पर हज फ़र्ज़ किया गया, लेहाज़ा हज करो।

एक शख़्स ने अर्ज़ किया: क्या हर साल या रसूलल्लाह! हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने सकूत फ़रमाया। उन्होंने तीन बार यह कलमह कहा। सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया: अगर मैं हॉ कह देता तो तुम पर वाजिब हो जाता और तुम से न हो सकता, फिर फ़रमाया: जब तक मैं किसी बात को बयान न करूँ तुम मुझसे सवाल न करो, अगले लोग कसरते सवाल और फिर अम्बेया की मोखालफत से हलाक हुए, लेहाज़ा जब मैं किसी बात का हुक्म दूँ तो जहाँ तक हो सके उसे करो और जब मैं किसी बात से मना करूँ तो उसे छोड़ दो।

(सहीह मुस्लिम, बाब फरजुल हज मररतो फिल उमर, हदीस नं० 1337, सफहा 698)

हज की फ़ज़ीलत:

हज़रत अबू होरैरह रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि मैंने अबुल क़सिम को फ़रमाते सुना: जो ख़ानह क़अबह के कसद से आया और ऊँट पर सवार हुआ तो ऊँट जो कदम उठाता और रखता है, अल्लाह तआला उसके बदले उसके लिए नेकी लिखता है और ख़ता को मिटाता है और दरजह बुलन्द फ़रमाता है, यहाँ तक कि जब क़अबह मोअज़्ज़मह के पास पहुँचा और तवाफ़ किया और सफा व मरवह के दरमियान सर्ई की, फिर सर मुन्डवाया या बाल कतरवाए तो गुनाहों से ऐसा निकल गया, जैसे उस दिन कि माँ के पेट से पैदा हुआ। (शोबुल ईमान, बाब फ़जुल हज व उमरह, हदीस नं० 4115, जिल्द 3, सफहा 478)

हज़रत इब्ने उमर रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहोमा से रवायत है, वह कहते हैं: मैं मस्जिद मेना में नबी सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था। एक अन्सारी और एक सक़फी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ किया, फिर कहा: या रसूलल्लाह! हम कुछ पूछने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं?

सरकार अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया: अगर तुम चाहो तो मैं बता दूँ कि क्या पूछने हाज़िर हुए हो और अगर चाहो तो मैं कुछ न कहूँ, तुम ही सवाल करो, अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह हमें बता दीजिए, इरशाद फ़रमाया: तू इसलिए हाज़िर हुआ है कि घर से निकल कर बैतुल ह़राम के क़सद से जाने को दरयाफ़्त करे और यह कि इसमें तेरे लिए क्या सवाब है, और त़वाफ़ के बाद दो रक़अतें पढ़ने को और यह कि इसमें तेरे लिए क्या सवाब है, और सफ़ा व मरवह के दरमियान सई को और यह कि इसमें तेरे लिए क्या सवाब है, और अ़रफ़ा की शाम के वक़ूफ़ को और यह कि इसमें तेरे लिए क्या सवाब है, और जमार की रमी को और इसमें तेरे लिए क्या सवाब है, और कुरबानी करने को और इसमें तेरे लिए क्या सवाब है, और उसके साथ त़वाफ़े इफ़ाज़ा (त़वाफ़े ज़ेयारत) को और इसमें तेरे लिए क्या सवाब है।

उस शख़्स ने अर्ज़ की: क़सम है! उस ज़ात की जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम को हक़ के साथ भेजा, इसीलिए हाज़िर हुआ था कि इन बातों को हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम से दरयाफ़्त करूँ। इरशाद फ़रमाया: जब तू बैतुल ह़राम के क़सद से घर से निकलेगा तो ऊँट के हर क़दम रखने और हर क़दम उठाने पर तेरे लिए हसना लिखा जायेगा और तेरी ख़ता मिटा दी जायेगी और त़वाफ़ के बाद की दो रक़अतें ऐसी हैं जैसे औलादे इस्माईल में कोई गुलाम हो, उसके आज़ाद करने का सवाब, और सफ़ा व मरवह के दरमियान सई सत्तर गुलाम आज़ाद करने के मिस्ल है।

और अ़रफ़ह के दिन वक़ूफ़ करने का हाल यह है कि अल्लाह अज़्वजल आसमाने दुनिया की तरफ़ खास तजल्ली फ़रमाता है और तुम्हारे

साथ मलाइकह पर मुबाहात फ़रमाता है, इरशाद फ़रमाता है: मेरे बन्दे दूर-दूर से परागन्दह सर मेरी रहमत के उम्मीदवार होकर हाज़िर हुए, अगर तुम्हारे गुनाह रेतों की गिनती और बारिश के कतरों और समन्दर के झाग बराबर हों तो मैं सबको बख़्श दूँगा। मेरे बन्दो! वापस जाओ तुम्हारी मग़फ़रत हो गई और उसकी जिसकी तुम शफ़ाअत करो।

और जमरों पर रमी करने में हर कंकरी पर एक ऐसा कबीरह मिटा दिया जायेगा जो हलाक करने वाला है और कुरबानी करना तेरे रब के हुजूर तेरे लिए ज़खीरह है और सर मुडाने में हर बाल के बदले में हसनह लिखा जायेगा और एक गुनाह मिटा दिया जायेगा इसके बाद खानह कअ़ाबह के त़वाफ़ का यह हाल है कि तू त़वाफ़ कर रहा है और तेरे लिए कुछ गुनाह नहीं। एक फ़रिश्तह आएगा और तेरे शानों के दरमियान हाथ रखकर कहेगा कि ज़मानह आइन्दह में अमल कर और ज़मानह गुज़िशतह में जो कुछ था मअ़ाफ़ कर दिया गया। (अत्तरगीब व तरहीब, अत्तरगीब फिल हज़ वल उमरह)

आदाबे सफ़र व मोक़द्दमाते हज़:

(1) जिसका कर्ज़ आता हो, या अमानत पास हो अदा कर दे, जिनके माल नाहक़ लिए हों वापस कर दे या मअ़ाफ़ करा ले, पता न चले तो इतना माल फ़कीरों को दे दे।

(2) नमाज़, रोज़ह, ज़कात जितनी इबादात जिम्मह पर हों अदा करे और तायब हो और आइन्दह गुनाह न करने का पक्का इरादह करे।

(3) जिसकी बेइजाज़त सफ़र मकरुह है जैसे माँ, बाप, शौहर उसे रज़ामन्द करे, जिसका उस पर कर्ज़ आता है उस वक़्त न दे सके तो उससे भी इजाज़त ले, फिर हज़ फ़र्ज़ किसी की इजाज़त न देने से रोक नहीं सकता, इजाज़त में कोशिश करे, न मिले जब भी चला जाये।

(4) इस सफ़र से मक़सूद सिर्फ़ अल्लाह अज़्वजल व रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तअ़ाला अलैहे वसल्लम हों, रेया व सुमअ़ा व फ़ख़र न हो।

(5) औरत के साथ जब तक शौहर या महरम बालिग़ काबिले इत्मीनान न हो, जिससे निकाह हमेशा को हराम है, सफ़र हराम है, अगर करेगी हज़ हो जायेगा, मगर हर क़दम पर गुनाह लिखा जायेगा।

(6) तोशह माले हलाल से ले वरनह कुबूले हज की उम्मीद नहीं, अगरचह फर्ज उतर जायेगा, अगर अपने माल में कुछ शुबहा हो तो कर्ज लेकर हज को जाये और वह कर्ज अपने माल से अदा कर दे।

(7) हाजत से ज्यादह तोशह ले कि रफीकों की मदद और फकीरों पर तसद्दुक करता चले, यह हज्जे मबरुर की निशानी है।

(8) आलिम कुतुबे फेकह बकदरे केफायत साथ ले और बेइल्म किसी आलिम के साथ जाये। यह भी न मिले तो कम अज़ कम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरैलवी अलैहिर्रहमह का रेसालह “अनवरुल बशारत फी मसायल अलहज व ज़ेयारत” या सदरुस शरीअह मुफ्ती अमजद अली आज़मी अलैहिर्रहमह की किताब “बहारे शरीअत छठा हिस्सा” हमराह हो।

(9) आईनह, सुरमा, कंधा, मिस्वाक साथ रखे कि सुन्नत है।

(10) चलते वक़्त सब अज़ीजों दोस्तों से मिले और अपने कुसूर मआफ़ कराए और उन पर लाज़िम है कि दिल से मआफ़ कर दें। हदीस में है: जिसके पास उसका मुसलमान भाई मआज़रत लाए वाजिब है कि कुबूल कर ले, वरना हौज़े कौसर पर आना न मिलेगा वक़्ते रुख़सत सबसे दुआ कराए ताकि बरकत पाए, क्योंकि दूसरों की दुआ के कुबूल होने की ज्यादह उम्मीद है और यह नहीं मालूम कि किस की दुआ कुबूल हो, लेहाज़ा सबसे दुआ कराए और वह लोग हाजी या किसी को रुख़सत करें तो वक़्ते रुख़सत यह दुआ पढ़ें:

أَسْتُوْدِعُ اللهَ دِيْنَكَ وَ أَمَانَتَكَ وَ خَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ .

(11) उन सबके दीन, जान, माल, औलाद, तन्दरुस्ती, आफियत खुदा को सौंपे।

(12) लेबासे सफर पहनकर घर में चार रकअत नफ़ल **وَقُلْ** से पढ़कर बाहर निकले। वह रकअतें वापस आने तक उसके अहल व माल की निगहबानी करेगी। नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَنْتَشَرْتُ وَ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَ بِكَ اِعْتَصَمْتُ وَ عَلَيْنَا
تَوَكَّلْتُ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ ثِقَتِيْ وَ اَنْتَ رَجَائِيْ، اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ وَ مَا لَا اَهْتَمُّ بِهِ وَ مَا
اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّيْ، عَزَّ جَارُكَ وَ لَا اِلَهَ غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ رُوِّدْنِيْ التَّقْوَى وَ اَغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ وَ
وَجِّهْنِيْ لِي الْحَيْرِ اَيُّمًا تَوَجَّهْتُ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْتَاءِ السَّفَرِ وَ كَاِبَةِ

الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوْرِ بَعْدَ الْكُورِ وَ سُوءِ الْمَنْظَرِ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَالِدِ.

(13) घर से निकलने के पहले और बाद कुछ सदका करे।

(14) दरवाज़े से बाहर निकलते ही यह दुआ पढ़े:

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ وَبِاللَّهِ وَتَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ
أَنْ نَزَلَ أَوْ نُزِلَ أَوْ نُضِلَّ أَوْ نُضَلَّ أَوْ نُظْلَمَ أَوْ نُظْلَمَ أَوْ يُجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا أَحَدٌ.

और दुरुद शरीफ़ पढ़े।

(15) सबसे रुख़सत होने के बाद अपनी मस्जिद से रुख़सत हो, वक़्ते कराहत न हो तो उसमें दो रकअत नफ़ल पढ़े।

(16) ज़रूरियाते सफ़र अपने साथ ले और समझदार और वाकिफ़ कार से मशवरा भी ले, पहनने के कपड़े कई जोड़े साथ रख ले।

(17) खुशी-खुशी घर से जाए और ज़िक्रे इलाही बकसरत करे और हर वक़्त खौफ़े खुदा दिल में रखे, ग़ज़ब से बचे, लोगों की बात बर्दाश्त करे, इतमिनान व वकार को हाथ से न जाने दे, बेकार बातों में न पड़े।

(18) घर से निकले तो यह ख़याल करे जैसे दुनिया से जा रहा है चलते वक़्त यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَ سُوءِ الْمَنْظَرِ فِي الْمَالِ
وَالْأَهْلِ وَالْوَالِدِ.

वापसी तक माल व अहलो अयाल महफूज़ रहेंगे।

(19) उसी वक़्त से قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ और آية الكرسي तक सेवा पाँच सूरतों सब मअ बسم الله पढ़े फिर आख़िर में एक बार बسم الله शरीफ़ पढ़ ले, रास्ते भर आराम से रहेगा।

(20) नीज़ उस वक़्त إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأْدُكَ إِلَى مَعَادٍ. एक बार पढ़ ले, बिलख़ैर वापस आएगा।

(21) जिस सवारी पर सवार हो, बسم الله तीन बार कहे, फिर اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ, هر एक तीन-तीन बार, سُبْحَانَ اللَّهِ और الْحَمْدُ لِلَّهِ أَكْبَرُ, फिर कहे:

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ. وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ.

उसके शर से बचे।

(22) बद्दुओं और अरबियों से बहुत नरमी के साथ पेश आए, अगर वह सख्ती करें अदब से तहम्मल करे, इस पर शफाअत नसीब होने का वादा फरमाया है। खोसूसन अहले हरमैन, खोसूसन अहले मदीना, अहले अरब के अफ़अल पर एतराज़ न करे, न दिल में कोदूरत लाए, इसमें दोनों जहाँ की सआदत है।

(23) कुबूले हज़ के लिए तीन शर्तें हैं: अल्लाह अज़्वजल फरमाता है:

فَلَا رَفَتْ وَلَا فُسُوقَ لَا وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ. ط

हज़ में न फ़हश बात हो न हमारी नाफरमानी, न किसी से झगड़ा लड़ाई।

तो इन बातों से नेहायत ही दूर रहना चाहिए जब गुस्सा आए या झगड़ा हो या किसी मआसियत का ख़याल हो फौरन सर झुका कर क़ल्ब की तरफ मोतवज्जह होकर इस आयत की तिलावत करे और दो एक बार لا حول شريف पढ़े, यह बात जाती रहेगी, यही नहीं कि उसी की तरफ़ से इब्तेदा हो, या उसके रुफ़का के साथ जेदाल, बल्कि बाज़ अवकात इम्तेहानन राह चलतों को पेश कर दिया जाता है ताकि बेसबब उलझते, बल्कि सब व शितम व लान व तान को तैयार होते हैं, इसलिए उसे हर वक्त होशियार रहना चाहिए, मोबादा एक दो कलमे में सारी मेहनत और रुपया बर्बाद हो जाये।

(24) जिस मन्ज़िल में उतरे, वहाँ यह दुआ पढ़ ले:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، اللَّهُمَّ أَعْطِنَا خَيْرَ هَذَا الْمَنْزِلِ وَخَيْرَ مَا فِيهِ، وَآخِرْنَا شَرِّ هَذَا الْمَنْزِلِ وَشَرِّ مَا فِيهِ، اللَّهُمَّ أَنْزِلْنِي مَنْزِلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ.

हर नुकसान से बचेगा और बेहतर यह है कि वहाँ दो रकअत नमाज़ पढ़े।

खबरदार! खबरदार! नमाज़ हरगिज़ न तर्क करना कि यह हमेशा बहुत बड़ा गुनाह है और इस हालत में और सख्त तर, कि जिनके दरबार में जाते हो रास्ते में उन्हीं की नाफरमानी करते चलो, तो बताओ कि तुमने उनको राज़ी किया या नाराज़?

(25) जब वह बस्ती पर नज़र पड़े जिसमें ठहरना या जाना चाहता है तो यह कहे:

اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْأَرْضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيْطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الْأَرْيَاحِ وَمَا دَرَيْنِ، اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَأْذِنُكَ

خَيْرٌ هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَ خَيْرٌ أَهْلِهَا وَ خَيْرٌ مَا فِيهَا وَ نَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَ شَرِّ أَهْلِهَا وَ شَرِّ مَا فِيهَا.

या सिर्फ पिछली दुआ पढ़े, हर बला से महफूज़ रहेगा।

(26) जिस शहर में जाये वहाँ के सुन्नी आलिमों और बाशरअ फ़कीरों के पास अदब से हाज़िर हो, मज़ारात की ज़ेयारत करे, फुजूल सैर व तमाशे में वक़्त न खोए।

(27) जिस आलिम की ख़िदमत में जाये वह मकान में हो तो आवाज़ न दे, बाहर आने का इन्तेज़ार करे, उसके हुज़ूर बेज़रूरत कलाम न करे बेइजाज़त लिए मसअलह न पूछे, उसकी कोई बात अपनी नज़र में खेलाफ़े शरअ मालूम हो तो एतराज़ न करे और दिल में नेक गुमान रखे, मगर ये सुन्नी आलिम के लिए है, बद मज़हब के साए से भागे।

(28) ज़िक्रे खुदा से दिल बहलाए कि फ़रिश्तह साथ रहेगा, न कि शेअर व लगवयात से कि शैतान साथ होगा।

(29) हर सफ़र ख़ोसूसन सफ़रे हज़ में अपने और अपने अज़ीज़ों, दोस्तों के लिए दुआ से ग़ाफ़िल न रहे कि मुसाफ़िर की दुआ कुबूल है।

(30) हर बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त الله اكبر कहे और ढाल में उतरते वक़्त سبحان الله कहे।

(31) सोते वक़्त एक बार آية الكرسي हमेशा पढ़े कि चोर और शैतान से अमान है।

(32) वापसी में भी वही तरीके मलहूज़ रखे, जो यहाँ तक बयान हुए।

(33) लोगों को चाहिए कि हाजी का इस्तेक़बाल करें और उसके घर पहुँचने से क़ब्ल दुआ कराएँ, कि हाजी जब तक अपने घर में क़दम नहीं रखता उसकी दुआ कुबूल है।

(34) सबसे पहले अपनी मस्जिद में आकर दो रकअत नफ़्त पढ़े।

(35) दो रकअत घर में आकर पढ़े फिर सबसे खुशी-खुशी मिले।

(36) अज़ीज़ों, दोस्तों के लिए कुछ न कुछ तोहफ़ा ज़रूर लाए, और हाजी का तोहफ़ा तबर्क़ाते हरमैन शरीफ़ैन से ज़्यादाह क्या है और दूसरा तोहफ़ा दुआ का कि मकान में पहुँचने से पहले इस्तेक़बाल करने वालों और

सब मुसलमानों के लिए करे। (बहारे शरीअत, हिस्सह ससुम मुलख़सन)

तोहफ़ा देने वाले के आदाब:

जिसे तोहफ़ा दे रहा है उसकी फ़ज़ीलत को मद्दे नज़र रखे, उसके तोहफ़े को कुबूल कर लिया जाए तो खुशी व मोसरत का इज़हार करे, जब तोहफ़ा लेने वाले से मुलाकात करे तो उसका शुक्रिया अदा करे, और उसे कुल्ली अख़्तियारात दे दे अगरचह तोहफ़ा बड़ा हो। (आदाबे दीन मुलख़सन)

तोहफ़ा लेने वाले के आदाब:

तोहफ़ा लेने वाले को चाहिए कि तोहफ़ा मिलने पर खुशी का इज़हार करे, अगरचह वह कम कीमत का हो तोहफ़ा भेजने वाले की ग़ैर मौजूदगी में उसके लिए दुआये ख़ैर करे। जब वह आए तो ख़न्दह पेशानी के साथ उससे मुलाकात करे, जब कुदरत हासिल हो तो ये भी अपने मोहसिन को तोहफ़ा वग़ैरह दे, जब मौका मिले उसकी तारीफ़ करे, उसके सामने आजज़ी न करे, उससे एहतेयात् बरते, कि कहीं उसकी मोहब्बत में ईमान न चला जाए, दोबारह उससे तोहफ़ा वग़ैरह हासिल करने की हिरस व तमआ न करे। (आदाबे दीन मुलख़सन)

आलिम के पास हाज़िरी के आदाब:

आलिमे दीन की ख़िदमत में हाज़िर होने वाले को चाहिए कि उसे सलाम करने में पहल करे, उसके सामने गुफ़तगू कम करे, जब वह खड़ा हो तो उसकी ताज़ीम के लिए खड़ा हो जाये। उसके सामने यूँ न कहे: फ़लाँ ने तो आपके खिलाफ़ कहा है, आलिम की मौजूदगी में उसके हमनशीन से सवाल न करे, न तो आलिम से गुफ़तगू करते वक्त हँसे और न ही उसकी राय के खिलाफ़ मशवरह दे। जब वह खड़ा हो तो उसका दामन न पकड़े, रास्ते में चलते हुए उससे मसाएल न समझे, जब तक कि वह घर न पहुँच जाए, आलिम की उकताहट के वक्त उसके पास कम आया जाया करे। (आदाबे दीन मुलख़सन)

तालिबे इल्म के आदाब:

शागिर्द को चाहिए कि उस्ताज़ साहब के सामने दिल में आजज़ी पैदा करे और पूरी तवज्जह के साथ सर झुका कर बैठे। पढ़ने से पहले इजाज़त तलब करे, फिर तऊज़ व तसमीयह (यानी بِسْمِ اللّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ) और शरीफ़)

पढ़े और जब पढ़ाई से फ़ारिग हो तो दुआ करे। (आदाबे दीन मुलख़्ख़सन)

वआज़ व नसीहत सुनने वाले के आदाब:

हमेशा खुशूअ व खुजूअ (आजज़ी व इनकेसारी) की कैफ़ियात पैदा करने की कोशिश करे, जो कुछ सुने उसे याद रखने की कोशिश करे, वआज़ व नसीहत करने वाले के मोतअल्लिक हुसने ज़न रखे, वाइज़ की बात के दुरुस्त होने का ऐतकाद रखे, हमेशाह ख़ामोश रहने की आदत अपनाए, मुस्तक़िल मेज़ाजी अख़्तियार करे, अपने ग़मों और फिकरों को मुज्तमआ कर ले। (यानी दुनियवी ख़्यालात में मशगूल न रहे) और लोगों पर तोहमत लगाने से बचे। (आदाबे दीन मुलख़्ख़सन)

वालिदैन के आदाब:

बेटे को चाहिए कि वालिदैन की बात तवज्जह से सुने, माँ-बाप जब खड़े हों तो ताज़ीमन उनके लिए खड़ा हो जाए, जब वह किसी काम का हुक्म दें तो फौरन बजा लाए, उन दोनों के खाने-पीने का इन्तेज़ाम व इन्सेराम करे और नर्म दिली से उनके लिए आजज़ी का बाजू बिछाए, वह अगर कोई बात बार-बार कहें तो उनसे उकता न जाए, उनके साथ भलाई करे तो उन पर एहसान न जताए, वह कोई काम कहें तो उसे पूरा करने में किसी किस्म की शर्त न लगाए, उनकी तरफ़ हेकारत की निगाह से न देखे, और न हर किसी मामले में उनकी नाफ़रमानी करे। (आदाबे दीन मुलख़्ख़सन)

औलाद के आदाब:

वालिद को चाहिए कि नेकी व एहसान में औलाद की मदद करे, और उन्हें ताक़त से ज्यादा भलाई का पाबन्द न करे, उनकी परेशानी व तंगदस्ती के वक़्त उनसे किसी चीज़ का मोतालबह न करे, उन्हें अल्लाह अज़्वजल की इत्ताअत व फरमांबरदारी से मना न करे, और उनकी तरबियत व परवरिश करने पर उन पर एहसान न जतलाए। (आदाबे दीन मुलख़्ख़सन)

इस्लामी भाई-चारे के आदाब:

एक मुसलमान को चाहिए कि भाईयों से मुलाकात के वक़्त खुशी व मोसरत का इज़हार करे, गुफ़्तगू करते हुए सलाम से इब्तेदा करे, जब मिलकर

बैठें तो उनकी बात गौर से सुनते हुए उन्हें अपने से मानूस करे, उनके लिए कुशादगी व उसअत पैदा करे, जब वह जाने के लिए खड़े हों तो उन्हें रुखसत करने के लिए दरवाज़ह तक जाए, कोई कलाम कर रहा हो तो ख़ामोशी अख़्तियार करे और गुफ़तगू में लड़ाई-झगड़े को ना पसन्द करे, हकायात वगैरह को उम्दगी व खूबी के साथ बयान करे, और जब भाईयों को पुकारे तो पसन्दीदह और अच्छे नामों के साथ पुकारे। (आदाबे दीन मुलख़ब्रसन)

पड़ोसी के आदाब:

जब कोई शख्स अपने पड़ोसी से मुलाक़ात करे तो सलाम करने में पहल करे, गुफ़तगू करते हुए बात को ज़्यादाह तूल न दे, न उससे ज़्यादाह सवाल करे, पड़ोसी बीमार हो तो उसकी अयादत करे। उसे कोई मुसीबत पहुँचे तो उससे ताज़ियत करते हुए उसे तसल्ली दे, जब उसको खुशी हासिल हो तो उसे मुबारकबाद दे, पड़ोसी के लड़के और मुलाज़िम के साथ नरमी व मेहरबानी से गुफ़तगू करते हुए हुसने एख़लाक़ से पेश आये, पड़ोसी की ग़लती पर उससे दरगुज़र करे, उसकी लगज़िश व ख़ता पर नरमी से उस पर अताब करे, उसकी घर की औरतों को देखने से अपनी निगाह को बचाए, वह फ़रियाद करे तो उसकी मदद करे। (आदाबे दीन मुलख़ब्रसन)

पड़ोसी के हुकूक:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अमूर रज़ीअल्लाहो तअ़ाला अ़नहोमा से रेवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तअ़ाला अ़लैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम्हें मालूम है कि पड़ोसी का क्या हक़ है? उसका हक़ यह है कि वह तुमसे मदद माँगे तो मदद करो, और जब कर्ज़ माँगे तो कर्ज़ दो, और जब मोहताज हो तो उसे दो, और जब बीमार हो तो अयादत करो, और जब उसे ख़ैर पहुँचे तो मुबारकबाद दो, और जब मुसीबत पहुँचे तो ताज़ियत करो, और मर जाए तो जनाज़ह के साथ जाओ, और बग़ैर इजाज़त अपनी इमारत बुलन्द न करो, कि उसकी हवा रोक दो, और अपनी हाँडी से उसको इज़ा न दो, मगर उसमें से कुछ उसे भी दो, और मेवे खरीदो तो उसके पास भी हदीयह करो, और अगर हदीयह न करना हो तो छुपाकर मकान में लाओ और तुम्हारे

बच्चे उसे लेकर बाहर न निकलें कि पड़ोसी के बच्चों को रन्ज होगा।

तुम्हें मालूम है कि पड़ोसी का क्या हक है? कसम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है! पूरे तौर पर पड़ोसी का हक अदा करने वाले थोड़े हैं वही हैं जिन पर अल्लाह अज़्वजल की मेहरबानी है।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो तअ़ाला अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि पड़ोसी तीन किस्म के हैं: बआज़ के तीन हक हैं, बआज़ के दो और बआज़ का एक हक है। जो पड़ोसी मुस्लिम हो और रिश्तह वाला हो, उसके तीन हक हैं- हक जवार (पड़ोस) और हक इस्लाम और हक क़राबत। पड़ोसी मुस्लिम के दो हक हैं- हक जवार (पड़ोस) और हक इस्लाम, और पड़ोसी काफ़िर का सिर्फ एक हक है, हक जवार (पड़ोस)। (शोबुल ईमान, बाबे फी एकराम अलजार, अलहदीस: 9560)

मोतफ़रि़क आदाब:

बआज़ हुक़मा ने यह आदाब बयान फ़रमाए हैं: अपने दोस्त व दुश्मन को ज़लील व रुसवा किए बग़ैर ख़न्दह पेशानी से उनके साथ मुलाक़ात कर, उनसे ख़ौफ़ज़दह न हो, उन पर बड़ाई व बरतरी की तमन्ना किए बग़ैर उनकी ताज़ीम व तौक़ीर कर, अपने तमाम ओमूर में मयानह रवी अख़्तियार कर, गुरुर व तकब्बुर न कर, इधर-उधर तवज्जह करने से बच, लोगों के मजमअों का मोआईनह न कर।

जब तू कहीं बैठे तो अपनी उंगलियों को चटकाने, अँगूठी के साथ खेलने, दाँतों का ख़लाल यानी सफ़ाई करने, बार-बार नाक में हाथ डालने यानी उसे साफ़ करने, चेहरे से मक्खियाँ उड़ाने, और कसरत से अँगड़ाई और जमाही लेने से बच।

तेरी महफ़िल पुरसकून और कलाम पुर दलील हो, जो तुझसे गुफ़तगू करे उसके कलाम की उमदगी की तरफ़ मोतवज्जह होकर न तो तअज़्जुब कर, न आजज़ी व बेचारगी का इज़हार कर, और न ही उससे बेतअल्लुक होने की कोशिश कर, हँसी मज़ाक़ और हकायत वग़ैरह बयान करने पर उसका मोआख़ज़ह न कर, अपनी औलाद और ख़ादमह के हुस्न व जमाल के मोतअल्लिक गुफ़तगू न कर, न तो सजी सँवरी औरत की तरह बन-ठन कर रह, और न ही गुलामों की तरह छिछोरहपन अख़्तियार कर, तमाम ओमूर में मयानह रवी अख़्तियार कर, कसरत से सुरमा लगाने और बालों में तेल डालने

में इस्राफ़ करने से बच, हेकायात वगैरह बयान करने में शोखी न जता, अपने अहल व अयाल को ज़्यादाह शोहरत न दे।

हज़रत सैय्यदना इमामे मालिक बिन अनस रज़ीअल्लाहो तआला अनहो ने इसकी वजह बयान फ़रमाई: अगर शोहरत कम होगी तो तुम्हारे नज़दीक इसकी कोई अहमियत न होगी और अगर ज़्यादाह होगी तो फिर भी तू अहल व अयाल को राजी न कर सकेगा।

इनसे बगैर किसी लालच के मोहब्बत कर, और बगैर किसी ख़ौफ़ के उनके लिए नरम खू हो जा, जब तेरी किसी से तल्ख़ कलामी हो जाये तो सामने वाले की इज़्ज़त का ख़याल रख, और अपनी दलील में ग़ौर व फ़िक्र कर और हाथ से किसी की तरफ़ ईशारह न कर और घुटनों के बल न बैठ, जब तेरा गुस्सा ख़त्म हो जाए तब कलाम कर।

अगर तुझे बादशाह की सोहबत मयस्सर आए तो उससे ख़ौफ़ज़दह रह और अपने बारे में उसकी हालत व राए के तब्दील होने से अमन में न रह, और बादशाह के साथ इस तरह शफ़क़त व नर्मी से पेश आ, जिस तरह बच्चे पर शफ़क़त व नर्मी करता है, बादशाह की ख़्वाहिश के मोताबिक उससे कलाम कर, अगरचह बादशाह तेरी बात सुन लेता है मगर तू कभी-भी उसके, उसके घर वालों, उसकी औलाद और उसके रिश्तेदारों के मआमिलात में दख़ल अन्दाज़ी मत कर।

अपने पसन्दीदह दोस्तों से खासतौर से बच, क्योंकि वह तेरे दुश्मनों में से एक हैं और अपने माल को अपनी इज़्ज़त से ज़्यादाह अज़ीज़ न जान, जब लोगों के दरमियान हो तो कसरत से थूकने से गुरेज़ कर, क्योंकि ऐसा करने वाले को औरतों की तरफ़ मन्सूब किया जाता है, और अपने दोस्त के सामने उसकी उस चीज़ का इज़हार न कर जिसकी वजह से तुझे तकलीफ़ होती है, क्योंकि जब वह तेरी किसी नाज़ेबा हरकत को देखेगा तो तुझसे दुश्मनी करेगा यानी बदला लेगा, न तू किसी अकलमन्द से मज़ाक कर कि वह तुझसे हसद करने लग जाए, और न ही किसी बेवकूफ़ का मज़ाक उड़ा कि वह तुझ पर ही ज़ुरअत कर बैठे, क्योंकि हँसी-मज़ाक रोब व दबदबे को दूर करता, मक़ाम व मरतबे को गिरा देता, चेहरे की रौनक और आब व ताब ख़त्म करता ग़म का सबब बनता, मोहब्बत की मिठास ख़त्म करता, समझदार की अक्ल व फ़हम को

ऐबदार करता, बेवकूफ़ को जरी करता, अक्ल व दिमाग़ को फ़ना करता, अल्लाह अज़्वजल की रहमत से दूर करता, मज़म्मत व बुराई का बाइस बनता, ज़ब्त व तहम्मूल खत्म करता नीयतों में फुतूर डालता, दिलों को मुर्दा करता, गुनाहों की कसरत का सबब बनता, और ख़ामियों को ज़ाहिर करता।

हम अल्लाह अज़्वजल की बारगाह में इल्तेजा करते हैं कि हमें हिदायत याफतह लोगों की तरह हिदायत अता फ़रमा, अफ़ियत पाने वाले की तरह अफ़ियत अता फ़रमा, और हमारी भी ऐसी ही सरपरस्ती फ़रमा जैसे दूसरों की फ़रमाई, हमें जो कुछ अता फ़रमाया उसमें बरकत दे, जो फैसला फ़रमाया उसके शर से हमें महफूज़ फ़रमा, क्योंकि उसके फैसले को कोई टाल नहीं सकता, जिसे अल्लाह अज़्वजल ज़लील करे उसे कोई इज़्ज़त नहीं दे सकता और जिसे अल्लाह अज़्वजल इज़्ज़त दे उसे कोई ज़लील नहीं कर सकता, हमारा परवरदेगार बड़ी बरकत और बलन्दी वाला है, हम उससे मग़फ़रत चाहते हैं, उसी की बारगाह में तौबह करते हैं। (आदाबे दीन मुलख़्ख़सन)

खाना खाने का तरीका:

खाना **الحمد لله** पढ़कर शुरू किया जाए और खत्म करके **بسم الله** पढ़ें, अगर **بسم الله** कहना भूल गया है तो जब याद आ जाये यह कहे:

بِسْمِ اللَّهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ.

بسم الله बुलन्द आवाज़ से कहे कि साथ वालों को अगर याद न हो तो उससे सुनकर उन्हें याद आ जाए और **الحمد لله** आहिस्तह कहे, मगर जब सब लोग फ़ारिग़ हो चुके हों तो **الحمد لله** भी ज़ोर से कहे, कि दूसरे लोग सुनकर शुक्रे खुदा बजा लाएँ।

दाहिने हाथ से खाना खाए, हाथ से लुक़मा छूटकर दस्तरख़्वान पर गिर गया, उसे छोड़ देना इसराफ़ है, बल्कि पहले उसे उठाकर खाए, खाने की इब्तेदा नमक से की जाए और खत्म भी उसी पर करें, इससे सत्तर बीमारियाँ दफ़आ हो जाती हैं। (बहारे शरीअत)

पानी पीने का तरीका:

पानी **بسم الله** कहकर दाहिने हाथ से पिए और तीन साँस में पिए,

हर मरतबह बरतन को मुँह से हटाकर साँस ले। पहली और दूसरी मरतबह एक-एक घूँट पिए और तीसरी साँस में जितना चाहे पी डाले। इस तरह पीने से प्यास बुझ जाती है और पानी को चूसकर पिए, गट-गट बड़े-बड़े घूँट न पिये, जब पी चुके الحمد لله कहे।

इस ज़मानह में बाज़ लोग बाँएँ हाथ में कटोरा या गिलास लेकर पानी पीते हैं ख़सूसन खाने के वक़्त दाहिने हाथ से पीने को खिलाफ़े तहज़ीब जानते हैं, उनकी यह तहज़ीब तहज़ीबे नसारा है। इस्लामी तहज़ीब दाहिने हाथ से पीना है।

आजकल एक तहज़ीब यह भी है कि गिलास में पीने के बाद जो पानी बचा उसे फेंक देते हैं कि अब वह पानी जूटा हो गया जो दूसरों को नहीं पिलाया जाएगा, यह हिन्दुओं से सीखा है, इस्लाम में छूत-छात नहीं, मुसलमान के जूटे से बचने के कोई मआना नहीं और इस वजह से पानी फेंकना इसराफ़ है। (बहारे शरीअत)

कपड़ा पहनने की दुआ:

हज़रत मआज़ बिन अनस रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स कपड़ा पहने और यह पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ .

तो उसके अगले गुनाह बख़्श दिए जाएँगे। (सोनन अबू दाऊद)

इतना लेबास जिससे सत्तर औरत हो जाए और गर्मी व सर्दी की तकलीफ़ से बचे फ़र्ज़ है और इससे ज़ायद जिससे ज़ीनत मक़सूद हो और यह कि जब अल्लाह अज़्जल ने दिया है तो उसकी नेअ़मत का इज़हार किया जाये, यह मुस्तहब है। (बहारे शरीअत)

जिसके यहाँ मैय्यत हुई उसे इज़हारे ग़म में स्याह कपड़ा पहनना नाजाएज़ है। स्याह बिल्ले लगाना भी नाजाएज़ है कि अब्वलन: वह सोग की सूरत है। दोम: यह नसारा का तरीक़ा है। अय्यामे मोहरर्म में यानी पहली मोहरर्म से बारहवीं तक तीन किस्म के रंग न पहने जाएँ, स्याह कि यह राफज़ियों का तरीक़ा है, और सबज़ कि यह मुब्तदर्ईन यानी ताज़ियादारों का तरीक़ा है और सुख़ कि यह ख़ारजियों का तरीक़ा है, कि वह मआज़अल्लाह

इज़हारे मोसरत के लिए सुर्ख पहनते हैं। (बहारे शरीअत)

किसी के घर जाने के आदाब:

जब कोई शख्स दूसरे के मकान पर जाए, तो पहले अन्दर आने की इजाज़त हासिल करे, फिर जब अन्दर जाये तो पहले सलाम करे, उसके बाद बात-चीत शुरु करे, और अगर जिसके पास गया है वह बाहर है तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं, सलाम करे उसके बाद कलाम शुरु कर दे। (फतावा खानिया)

किसे के दरवाज़ह पर जाकर आवाज़ दी उसने कहा कौन? तो उसके जवाब में यह न कहे कि "मैं" जैसा कि बहुत से लोग "मैं" कहकर जवाब देते हैं। इस जवाब को हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने नापसन्द फ़रमाया, बल्कि जवाब में अपना नाम ज़िक्र करे, क्योंकि "मैं" का लफ़ज़ तो हर शख्स अपने को कह सकता है यह जवाब ही कब हुआ।

अगर तुमने इजाज़त माँगी और साहबे खाना ने इजाज़त न दी तो उससे नाराज़ न हो, अपने दिल में कदूरत न लाओ, खुशी-खुशी वहाँ से वापस आओ। हो सकता है उसको उस वक्त तुमसे मिलने की फुर्सत न हो, किसी ज़रूरी काम में मशगूल हो।

अगर ऐसे मकान में जाना हो कि उसमें कोई न हो तो यह कहे:

السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ الطَّالِحِينَ.

फ़रिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे। (रददुल मोहतार)

या इस तरह कहे: السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ. क्योंकि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की रुह मुबारक मुसलमान के घरों में तशरीफ़ फ़रमा है। (शरह शेफा, मुल्ला अली क़ारी)

सलाम के मसायल:

हज़रत अबू ओमामाह रज़ीअल्लाहो तआला अ़नहो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख्स पहले सलाम करे वह रहमते इलाही का ज़्यादाह मुस्तहिक् है। (सोनन अबू दाऊद)

इसमें एख़तेलाफ़ है कि अफ़ज़ल क्या है सलाम करना या जवाब देना? किसी ने कहा: जवाब देना अफ़ज़ल है, क्योंकि सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना वाजिब। बआज़ ने कहा: सलाम करना अफ़ज़ल है, कि इसमें

तवाज़अ है, जवाब तो सभी दे देते हैं मगर सलाम करने में बहुत से लोग कसरे शान समझते हैं। (फतावा आलमगीरी)

कोई तिलावत में मशगूल है या दर्स व तदरीस या इल्मी गुफ़तगू या सबक की तक़रार में है तो उसको सलाम न करे। इसी तरह अज़ान व अक़ामत व खुतबह जुमा व ईदैन के वक़्त सलाम न करे। सब लोग इल्मी गुफ़तगू कर रहे हों या एक शख़्स बोल रहा हो, बाकी सुन रहे हों, दोनों सूरतों में सलाम न करे, मसलन आलिम व अज़ाज़ कह रहा है या दीनी मसअलह पर तक़रीर कर रहा है और हाज़रीन सुन रहे हों, आने वाला शख़्स चुपके से आकर बैठ जाये, सलाम न करे। (आलमगीरी)

किसी से कह दिया कि फ़लाँ को मेरा सलाम कह देना, उस पर सलाम पहुँचाना वाजिब है और जब उसने सलाम पहुँचाया तो जवाब यूँ दे कि पहले उस पहुँचाने वाले को, उसके बाद उसको जिसने सलाम भेजा है यानी यह कहे: **وَعَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَام.** (आलमगीरी)

यह सलाम पहुँचाना उस वक़्त वाजिब है जब उसने इसका इल्तेज़ाम कर लिया हो यानी कह दिया हो कि हाँ तुम्हारा सलाम कह दूँगा, कि उस वक़्त यह सलाम उसके पास अमानत है जो उसका हक़दार है उसको देना ही होगा, वरना यह बमन्ज़लह वदीअत है कि उस पर यह लाज़िम नहीं कि सलाम पहुँचाने वहाँ जाये। इसह तरह हाज़ियों से लोग यह कह देते हैं कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के दरबार में मेरा सलाम अज़र कर देना, यह सलाम भी पहुँचाना वाजिब है। (रददुल मोहतार)

छींक के मसायल:

जिसको छींक आए उसे **اللَّهُ أَكْهَمُ** कहना चाहिए और बेहतर यह है कि **اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ** कहे। जब उसने **اللَّهُ أَكْهَمُ** कहा तो सुनने वाले पर उसका जवाब देना वाजिब हो गया और **حمد** न करे तो जवाब नहीं। एक मजलिस में कई मरतबह किसी को छींक आये तो सिर्फ़ तीन बार तक जवाब देना है, उसके बाद उसे इख़्तियार है कि जवाब दे या न दे। (बज़ाज़ियह)

जिसको छींक आये वह यह कहे: **اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ** या यह कहे: **فِيْرَحْمَتِكَ اللَّهُ** और उसके जवाब में दूसरा शख़्स यूँ कहे: **اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ حَالٍ**

दीन व ईमान की बरबादी का ज़रूर है और बदमज़हब अपनी बदमज़हबी फैलाने के लिए नमाज़, रोज़ह की बज़ाहिर ख़ूब पाबन्दी करते हैं ताकि उनका वफ़ार लोगों में कायम हो फिर जो गुमराही की बात करेंगे उनका पूरा असर होगा, लेहाज़ा ऐसों की बदमज़हबी का इज़हार फ़ासिक के फ़िस्क के इज़हार से ज़्यादाह अहम है, इसके बयान करने में हरगिज़ दरेग न करें। (बहारे शरीअत)

नाखुन तरशवाना:

जुमा के दिन नाखुन तरशवाना मुस्तहब है, हाँ अगर ज़्यादाह बढ़ गए हों तो जुमा का इन्तेज़ार न करे, कि नाखुन बड़ा होना अच्छा नहीं, क्योंकि नाखुन का बड़ा होना तंगी रिज़क का सबब है। एक हदीस शरीफ़ में है, कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम जुमा के दिन नमाज़ के लिए जाने से पहले मूँछें कतरवाते और नाखुन तरशवाते।

एक दूसरी हदीस में है कि जो जुमा के दिन नाखुन तरश्वाए, अल्लाह तआला उसको दूसरे जुमा तक बलाओं से महफूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ायद यानी दस दिन तक।

नाखुन तरशवाने का आसान तरीका जो हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम से मरवी है, वह यह है कि दाहिने हाथ की कलमह की उँगली से शुरु करे और छिंगलिया पर खत्म करे, फिर बाएँ की छिंगलिया से शुरु करके अँगूठे पर खत्म करे। उसके बाद दाहिने हाथ के अँगूठे का नाखुन तरश्वाए, इस सूरत में दाहिने ही हाथ से शुरु हुआ और दाहिने पर खत्म भी हुआ। (दुर्रे मुख़्तार)

पाँव के नाखुन तरशवाने में कोई तरतीब मन्कूल नहीं, बेहतर यह है कि पाँव की उँगलियों में ख़लाल करने की जो तरतीब है उसी तरतीब से नाखुन तरश्वाए यानी दाहिने पाँव की छिंगलिया से शुरु करके अँगूठे पर खत्म करे, फिर बाएँ पाँव के अँगूठे से शुरु करके छिंगलिया पर खत्म करे। (दुर्रे मुख़्तार)

जानवर लड़ाना और कुश्ती लड़ना:

जानवरों को लड़ाना मसलन मुर्ग, बटेर, तीतर, मेंढे, भैंसे वगैरह कि इन जानवरों को बआज़ लोग लड़ाते हैं, यह हराम है और उसमें शिरकत

करना या उसका तमाशह देखना भी नाजायज़ है।

कुश्ती लड़ना अगर लहव व लोअब के तौर पर न हो, बल्कि इसलिए हो कि जिस्म में कूवत आए, यह जायज़ व मुस्तहसन व कारे सवाब है बशर्त कि सतरपोशी के साथ हो।

आजकल बरहनह होकर सिर्फ एक लँगोट या जांधिया पहन कर लड़ते हैं कि सारी रानें खुली होती हैं, यह नाजायज़ है। हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने रोकाना से कुश्ती लड़ी और तीन मरतबह पछाड़ा, क्योंकि रोकाना ने यह कहा था कि अगर आप मुझे पछाड़ दें तो ईमान लाऊँगा, फिर यह मुसलमान हो गये। (दुर्रे मुख्तार, रद्दुल मोह्तार)

सोने के आदाब:

सोने में मुस्तहब यह है कि बातहारत सोये और कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रुखसारह के नीचे रखकर किब्लह रु सोये, फिर इसके बाद बायीं करवट पर, और सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहाँ तनहा सोना होगा, सेवाए अपने आमाल के कोई साथ न होगा, सोते वक़्त यादे खुदा में मशगूल हो, तहलील व तस्बीह व तहमीद पढ़े यहाँ तक कि सो जाए, कि जिस हालत पर इनसान सोता है उसी पर उठता है और जिस हालत पर मरता है क़यामत के दिन उसी पर उठेगा।

सोकर सुबह से पहले ही उठ जाए और उठते ही यादे खुदा करे और यह दुआ पढ़े: **أَلْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ**. इसका पक्का इरादह करे कि परहेज़गारी व तक़वा करेगा, किसी को सतायेगा नहीं, दिन के इत्तेदाई हिस्सह में सोना या मगरिब या इशा के दरमियान सोना मकरुह है। (फ़तावा आलमगीरी)

बैतुलख़ोला के आदाब:

बैतुलख़ोला में जाने वाला दाख़िल होने से पहले **بِسْمِ اللَّهِ** शरीफ़ पढ़कर दाख़िल होने की दुआ यानी **أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ**. जब बैठते हुए ज़मीन के करीब हो जाए तो आहिस्तगी से सतर खोले, इस्तेन्जा से फ़रागत के बाद हाथों को धोते हुए मिट्टी से उनको साफ़ कर ले, बाहर निकलने से पहले अपने सतर को छिपा ले, निकलने के बाद अल्लाह तआला का हम्द व शुक्र

بِحَمْدِ اللَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّي الْأَذَى وَعَافَانِي. : यह दुआ पढ़े और लाए बजा

बआज़ दुआएँ:

* जब कहीं दुश्मनों से खौफ हो, तो यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ.

* जब गुम व परेशानी लाहक हो तो यह दुआ पढ़े:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ और ऐसे वक्त और لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ और حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ की कसरत करे।

* अगर कोई चीज़ गुम हो जाये तो यह कहे:

يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ اِجْمَع

इंशाअल्लाह तआला वह चीज़ मिल जायेगी. بَيِّنِي وَبَيِّنْ صَالِحِي.

* जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत हो तो तीन बार कहे:

يَا عِبَادَ اللَّهِ أَعِينُونِي. ऐ अल्लाह अज़्जल के नेक बन्दो! मेरी मदद करो। ग़ैब से मदद होगी यह हुक्म हदीस में है।

* जब रात की तारीकी परेशान करने वाली आए, यह दुआ पढ़े:

يَا أَرْضُ! رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ، أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ مَا فِينِكَ وَشَرِّ مَا خَلَقَ فِينِكَ وَشَرِّ مَا دَبَّ عَلَيْكَ، وَ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ أَسَدٍ وَأَسْوَدٍ وَمِنَ الْحَيَّةِ وَالْعُقْرَبِ وَمِنَ سَاكِنِ الْبَلَدِ وَمِنَ الْوَالِدِ وَمَا وَلَدَ.

कुरआन करीम की ग्यारह सूरतें

सूरह फ़ातेहा:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ
سَتَعِينُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

सूरह फ़ील:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَ
أَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ
مَّا كُوِّلَ ۝

सूरह कोरैश:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا يَلْفُ قُرَيْشٍ ۝ الْفَهْمُ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِي
أَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوعٍ ۝ وَأَمَّنَّهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

सूरह माऊन:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالذِّينِ ۝ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ
الْيَتِيمِ ۝ فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ
يُرَاءُونَ ۝ وَيَسْنَعُونَ الْهَاعُونَ ۝

सूरह कौसर:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

सूरह काफ़ेरुन:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ وَلَا أَنَا
 عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۝ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝

सूरह नसर:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ
 بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ ۝ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

सूरह लहब:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ
 لَهَبٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝

सूरह अख़लास:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ لَمْ يُولَدْ ۝ لَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

सूरह फ़लक:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ
 النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

सूरह नास:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ
 الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

खुतबए ऊला बराए जुमा:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَ سَيِّدَنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَلَى الْعَالَمِينَ
 جَمِيعًا. وَأَقَامَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِلْمُذَنْبِينَ الْمُتَكَبِّرِينَ الْخَطَّائِينَ الْهَالِكِينَ
 شَفِيعًا. فَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ. وَعَلَى كُلِّ مَنْ هُوَ مَحْبُوبٌ وَمَرْضِيٌّ
 لَدَيْهِ. صَلَاةً تَبْقَى وَتُدُومُ بِدَاوَامِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الْقَيُّومِ. وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
 وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ. وَأَشْهَدُ أَنَّ سَيِّدَنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ أَمَا بَعْدُ
 فَيَا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ — رَحِمْنَا وَرَحِمَكُمْ اللَّهُ تَعَالَى — أَوْصِيكُمْ وَنَفْسِي بِتَقْوَى
 اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ فِي السِّرِّ وَالْإِعْلَانِ. فَإِنَّ التَّقْوَى سَنَامُ ذُرَى الْإِيْمَانِ. وَادْكُرُوا
 اللَّهَ عِنْدَ كُلِّ شَجَرٍ وَ حَجَرٍ. وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ. وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
 بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ. وَاقْتَفُوا آثارَ سُنَنِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ. صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى
 وَسَلَامُهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ. فَإِنَّ السُّنَنَ هِيَ الْأَنْوَارُ. وَزَيْنُوا قُلُوبَكُمْ بِحُبِّ
 هَذَا النَّبِيِّ الْكَرِيمِ. عَلَيْهِ وَعَلَى إِلِهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ. فَإِنَّ الْحُبَّ هُوَ
 الْإِيْمَانُ كُلُّهُ إِلَّا الْإِيْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّةَ لَهُ. إِلَّا الْإِيْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّةَ لَهُ. إِلَّا
 الْإِيْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّةَ لَهُ. رَزَقَنَا اللَّهُ تَعَالَى وَ إِيَّاكُمْ حُبَّ حَبِيبِهِ هَذَا النَّبِيِّ
 الْكَرِيمِ. عَلَيْهِ وَعَلَى إِلِهِ أَكْرَمُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ. كَمَا يُحِبُّ رَبَّنَا وَيَرْضَى.
 وَاسْتَعْمَلْنَا وَ إِيَّاكُمْ بِسُنَّتِهِ. وَحَيَّانَا وَ إِيَّاكُمْ عَلَى مَحَبَّتِهِ. وَتَوَفَّانَا وَ إِيَّاكُمْ عَلَى
 مِلَّتِهِ. وَادْخَلْنَا وَ إِيَّاكُمْ فِي جَنَّتِهِ بِمَنِّهِ وَكَرَمِهِ وَرَأْفَتِهِ. إِنَّهُ هُوَ الرَّءُوفُ
 الرَّحِيمُ. عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّم: الْبِرُّ لَا يَبْلَى وَالذَّنْبُ لَا يُنْسَى

وَالدَّيَّانُ لَا يَبُوتُ . اِعْمَلْ مَا شِئْتِ كَمَا تَدِينُ تَدَانِ . اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ . فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهُ . وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهُ . بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ . وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ . إِنَّهُ تَعَالَى مَلِكٌ كَرِيمٌ جَوَادٌ بَرُّ رَعُوفٌ رَّحِيمٌ .

खुतबए सानिया बराए जुमा:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنُؤْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ . وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ . وَمَنْ يُّضِلِّهِ اللهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ . وَنَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ . وَنَشْهَدُ اَنْ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ . صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى اٰلِهِ وَاصْحَابِهِ اَجْمَعِينَ . وَبَارَكَ وَسَلَّمْ اَبَدًا . لَا سِيَّيْمًا عَلٰى اَوْلِيَّهِمُ بِالْتَّصْدِيْقِ . اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَبِيْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقِ . رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ . وَعَلَى اَعْدَالِ الْاَصْحَابِ . اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَبِيْ حَفْصِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ . رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ . وَعَلَى جَامِعِ الْقُرْآنِ . اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَبِيْ عُمَرَ وَ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ . رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ . وَعَلَى اَسَدِ اللهِ الْغَالِبِ . اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَبِيْ الْحَسَنِ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ . رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ . وَعَلَى ابْنَيْهِ الْكَرِيْمَيْنِ الشَّهِيدَيْنِ . سَيِّدَيْنَا اَبِيْ مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ وَابِيْ عَبْدِ اللهِ الْحُسَيْنِ . رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا . وَعَلَى اُمَّهَمَا سَيِّدَةِ النَّسَاءِ . الْبِتُّوْلِ الزُّهْرَاءِ . رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا . وَعَلَى سَائِرِ فِرَقِ الْاَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ . وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ يَا اَهْلَ التَّقْوَى وَاَهْلَ الْمَغْفِرَةِ . اَللّٰهُمَّ اَنْصُرْ مَنْ نَصَرَ دِيْنَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ تَعَالَى

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ · رَبَّنَا يَا مَوْلَانَا وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ · وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِينَ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ · رَبَّنَا يَا مَوْلَانَا وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْهُمْ · عِبَادَ اللَّهِ
— رَحِمَكُمُ اللَّهُ — إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ · وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَى وَيَنْهَى
عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ · يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ · وَلَذِكْرُ اللَّهِ تَعَالَى أَعْلَى
وَأَوْلَى وَأَعَزُّ وَأَجَلُّ وَأَتَمُّ وَأَهَمُّ وَأَعْظَمُ وَأَكْبَرُ ·

शजरह आलिया

हज़रात आलिया क़ादरिया बरकातिया रज़विया

रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन एला यैमिद्दीन

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिए खुदा के वास्ते

मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलाएँ रद शहीदे करबला के वास्ते

सय्यदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते

सिदक़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर
बेग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रेज़ा के वास्ते

बहरे मारुफ़ व सरी मारुफ़ दे बेखुद सरी
जुन्दे हक़ में गिन जुनैदे बासफ़ा के वास्ते

बहरे शिब्ली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अब्दे वाहिद बेरिया के वास्ते

बुलफ़रह का सदक़ा कर ग़म को फ़रह दे हुसन व साद
बुलहसन और बूसईदे साद ज़ा के वास्ते

क़ादरी कर क़ादरी रख क़ादरियों में उठा
क़दरे अब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते

अहसनुल्लाहो लहुम रिज़कन से दे रिज़के हसन
बन्दए रज़ज़ाक़ ताजुल असफिया के वास्ते

नसर अबी सालेह का सदका सालेह व मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहिये जाँ फ़ज़ा के वास्ते

तूरे इरफान व ओलू व हम्द व हुसना व बहा
दे अली, मूसा, हसन, अहमद, बहा के वास्ते

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते

ख़ानए दिल को ज़्या दे रुप ईमाँ को जमाल
शह ज़्या मौला जमालुल औलिया के वास्ते

दे मोहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए
ख़वाने फज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते

दीन व दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्के हक़ दे इश्कीये इश्के इन्तेमा के वास्ते

हुब्बे अहले बैत दे आले मोहम्मद के लिये
कर शहीदे इश्क़ हमज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा, तन को सुथरा जान को पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल ओला के वास्ते

दो जहाँ में खादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रते आले रसूले मुक़तदा के वास्ते

नूरे जान व नूरे ईमाँ, नूरे क़ब्र व हशर दे
बुल हुसैने अहमद नूरी लका के वास्ते

कर अता अहमद रजाये अहमदे मुरसल मुझे
मेरे मौला हज़रते अहमद रजा के वास्ते

हामिद व महमूद और हम्माद व अहमद कर मुझे
मेरे मौला हज़रते हामिद रजा के वास्ते

सायये जुमला मशायख़ या खुदा हम पर रहे
रहम फ़रमा आले रहमाँ मुस्तफ़ा के वास्ते

बहरे इब्राहीम भी लुत्फो अताये खास हो
नूर की सरकार से हिस्सा गदा के वास्ते

ऐ खुदा अख़तर रजा को चर्ख़ पर इस्लाम के
रख़ दरख़शाँ हर घड़ी अपनी रजा के वास्ते

सदका उन अय्याँ का दे छः ऐन अज़ इल्म व अमल
अफ़व व डूरफ़ाँ अफ़ियत, हम सब गदा के वास्ते

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊँ नज़्म की तकलीफ को
शादिये दीदारे हुस्ने मुस्त्फ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरह की जब आये सख़्त रात
उनके प्यारे मुँह की सुबहे जाँ फ़ज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े महशर में शूरे दारो गीर
अमून देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

या इलाही जब जुबानें बाहर आएँ प्यास से
साहबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो

या इलाही सरद महरी पर हो जब खुरशीदे हशर
सय्यदे बेसायह के ज़िल्ले लेवा का साथ हो

या इलाही गर्मीये महशर से जब भड़के बदन
दामने महबूब की ठण्डी हवा का साथ हो

या इलाही नामये अमाल जब खुलने लगे
ऐब पोशे ख़ल्के सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंठों की दुआ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे खन्दये बेजा रोलाये
चश्मे गिरयाने शफीऐ मुर्तजा का साथ हो

या इलाही रँग लायें जब मेरी बे बाकियाँ
उनकी नीची-नीची नज़रों की हया का साथ हो

या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुल सरात
आफ़ताबे हाशमी नूरुल होदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़म ज़ोदा का साथ हो

या इलाही जो दुआँ नैक मैं तुझसे करूँ
कुदसियों के लब से आमी रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रज़ा ख़वाबे गेराँ से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्के मुस्तफ़ा का साथ हो

दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया का मुख्तसर तआरुफ

अज़ क़लम: मौलाना तारिक़ रज़ा मिस्बाही, साकिन कसया, पोस्ट मेंहदूपार,
ज़िला सन्तकबीर नगर, यू०पी०
मो० नं०: 09918630380

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहू व नोसल्ली अला रसूलेहिल करीम

ओलूम व फोनून की तरवीज व अशाअत के लिये क़ौम व मिल्लत के दानिश्वरों ने मदारिस का ऐसा सिलसिला कायम किया जो आज तक जारी व सारी है, अरब व अजम हर जगह मज़हबे हक़ की अशाअत और दीनी ओलूम व फोनून के फ़रोग के लिए दानिश्वराने क़ौम हमेशा सरगर्म रहे हैं। इब्तेदा में बाज़ाबता मदारिस का कायम तो नहीं हुआ लेकिन तआलीम व तअल्लुम और दर्स व तदरीस का सिलसिला अपनी पूरी आब व ताब के साथ जारी रहा, उस वक़्त आम तौर पर असातज़ये इल्म व फ़न इन्फ़ेरादी तौर पर अपनी-अपनी दर्सगाहें लगाते और मुतलाशियाने इल्म व फ़न परवानों की तरह उनके गिर्द मंडलाते थे। मसाजिद और ख़ानकाहें इस अन्दाज़ से बनाई जाती थीं कि उनमें दर्स व तदरीस की बज़में सजाई जा सकें, इन ग़ैर रस्मी दर्सगाहों से बड़े-बड़े अरबाबे फ़ज़ल व कमाल मरदाने इल्म व फ़न और असातीने फ़ि़क़्र व नज़र पैदा हुये जिनकी इल्मी नुक़तह आफ़रीनियों और फनी दक़ीक़ह संजियों ने इनसानी क़दरों को रक्षके मह व अन्जुम बना दिया और दुनिया उनके इल्मी ग़लग़लों से गूँज उठी।

इस्लामी मदारिस बाज़ाबता कब वजूद में आये, यह मोवररेख़ीन के नज़दीक़ मुख्तलिफ़ फ़ियह हैं। बआज़ का कहना है कि पहला अरबी इस्लामी मदरसा मलिक शाह सल्जुकी के वज़ीर नज़ामुल मुल्क ने बग़दाद में कायम किया, लेकिन बआज़ दूसरे मोवररेख़ीन मसलन इमाम जलालुद्दीन सिवती और अल्लामा सुबकी वग़ैरह फ़रमाते हैं कि नज़ामुल मुल्क के मदरसा कायम करने

से पहले नेशापुर के अन्दर एक एदारह “अल मदरसतुल बैहकियह” के नाम से मौजूद था जिसकी तामीर महमूद सबुकतगीन के भाई नसर बिन सबुकतगीन की कोशिशों से हुई थी।

इसके बाद आहिस्तह-आहिस्तह इस्लामी मदारिस खुलने लगे। और देखते ही देखते यह सिलसिला दराज़ हो गया, इन मदारिसे इस्लामिया से इल्म व फ़ज़ल के ऐसे-ऐसे आफ़ताब व माहताब तलूअ हुए जिनकी किरनों से फ़ज़ाये आलम मुनव्वर हो गई और बेशुमार गुम गुस्तगाने राह अपनी मन्ज़िले मक़सूद से हमकिनार हो गए। सच कहा है किसी शाअर ने-

यह मदरसे हैं तेरे मैकदे नहीं साकी

यहाँ की खाक से इन्सान बनाये जाते हैं

इसी सिलसिले की एक कड़ी “दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया” भी है जो अपनी तंग दामानी के बावजूद बड़ी तेज़ी के साथ शाहराहे तरक्की पर गामज़न है।

दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया का क़याम:

मौज़ा स्वाइचपार, पच्छिम मुहल्ला, पोस्ट बेलराई ज़िला सन्तकबीर नगर, यू०पी० में मोरख़ह 5 नवम्बर 2006 बरोज़े एकशंबह यह एदारह क़याम हुआ, इसके बानी व मोहतमिम हज़रत मौलाना अख़तरुल कादरी साहब हैं जो अपने तन-मन धन की कुर्बानी पेश करते हुए शब व रोज़ इस एदारे की तामीर व तरक्की के लिए कोशिश कर रहे हैं।

दारुल ओलूम के क़याम के इब्तेदाई दौर में हज़रत मौसूफ़ ने जिन नामसाएद हालात का मोकाबलह किया है, अगर कोई दूसरा आदमी होता तो हथियार डाल देता, लेकिन मौसूफ़ इन तमाम मोख़ालेफ़तों का जवाब बड़ी सन्जीदगी के साथ मोफ़क्किरे आज़म, मोहसिने क़ौम व मिल्लत, हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत अल्लामा शाह अब्दुल अज़ीज़ (बानी अलजामेअतुल अशरफ़िया, मुबारकपुर, आज़मगढ़) अलैहिर्रहमह के इस क़ौल पर अमल करके देते रहे कि “हर मोख़ालेफ़त का जवाब काम है” सच कहा है किसी शाअर ने-

हज़ार बिजलियाँ गिरें, लाख आँधियाँ आएँ

वह फूल खिलके रहेगा जो खिलने वाला है

الحمد لله हज़रत की कोशिशें बारआवर हुयीं और अब यह एदारह एक वसीअ व अरीज़ बिल्डिंग और खूबसूरत ग्राउण्ड के साथ मुसलमानों को दआवते नज़ारह दे रहा है, इस वक़्त इसमें दरजह एक से आठ तक, शोबए हिफ़ज़ व केरअत और दर्से नेज़ामी की तआलीम माहिर असातज़हे कराम की निगरानी में दी जा रही है और तिश्नगाने इल्म व फ़न उसके साफ़ व शफ़फ़ाफ़ आबशार से अपनी प्यास बुझा रहे हैं।

खुशी की बात यह है कि मोहतमिमे एदारह हज़रत मौलाना अख़्तरुल कादरी साहब सिर्फ़ इसी पर इकतेफ़ा करने वाले नहीं हैं, बल्कि उनका मेज़ाज और हौसला यह है कि-

नहीं तेरा नशेमन कसरे सुल्तानी के गुंबद पर

तू शाहीन है, बसेरा कर पहाड़ों की चटानों पर

अगर आप हज़रात की एनायतें साथ रहीं तो इंशाअल्लाह मुस्तक़बिले क़रीब में यह एदारह दारुल ओलूम से तरक्की करके जामेअह की शक़्ल अख़्तियार कर लेगा और उसमें अज़हरे हिन्द जामेअह अशरफिया मुबारकपुर के नेसाबे तआलीम के मोताबिक़ एदादियह से फ़ज़ीलत तक की मोकम्मल तआलीम दी जायेगी और असरी तआलीम का भी इन्तेज़ाम किया जायेगा, और उसके साथ एक अज़ीमुश्शान लाइब्रेरी कायम होगी, जिसमें हर शओबे की ज़रूरत के मोताबिक़ किताबें वाफ़िर मेक़दार में मौजूद होंगी-

तुझे ओरुज हो ऐसा नसीब दुनिया में

कि आसमाँ भी तेरी अज़मतों पर नाज़ करे।

अख़ीर में अहले ख़ैर हज़रात से गुज़ारिश है कि मोहतमिमे एदारह ने जो यह अज़ीम बोझ उठा रखा है उसे पायए तकमील तक पहुँचाने के लिए मज़ीद ज़मीन की ज़रूरत है और मज़ीद इमारतें दरकार हैं, इन ज़रूरतों के पेशे नज़र आप हज़रात इस एदारह की तरफ़ तवज्जह फ़रमाएँ और इसका माली तआउन फ़रमाकर इन्दल्लाह माज़ूर हों।

मोहम्मद तारिक़ रज़ा मिस्बाही

24 रबीउन्नूर 1434 हि० 6 फरवरी 2013 चहारशंभ

तअस्सुरात व दुआइयह कलमातः

हज़रत मौलाना मोहम्मद कासिम अज़ीज़ी मदज़िल्लहुल नूरानी
उस्तादः दारुल ओलूम अहले सुन्नत फैजुल इस्लाम, कस्बा मेंहदावल, ज़िला
सन्तकबीर नगर, यू०पी०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ.

ज़ेरे नज़र किताब (आदाबे बन्दगी) अपने मौजूज़ पर नेहायत गरौं क़द्र, मोदल्लल और आलेमानह किताब है, जिसे अज़ीज़म मोकर्रम हज़रत मौलाना अख़तरुल कादरी साहब कादरी ज़ीदा इल्महू बानी दारुल ओलूम अहमदिया बरकातिया स्वाइचपार, ज़िला सन्तकबीर नगर, यू०पी० ने बड़ी अर्क रेज़ी और जाफेशानी से मोरत्तब किया है। इसके मुन्दरजात कुरआन व हदीस से साबित हैं उम्मीद है कि इस किताब से अ़वाम व ख़्वास पूरी तरह मुस्तफ़ीद होंगे।

मौला तआला इस किताब को मक़बूले खास व आ़ाम और मोफ़ीदे अनाम बनाये मौलाना मौसूफ की मसाई जमीलह को शर्फ़े कुबूल बख़्शे।

آمین بجاؤ سید المرسلین صلی الله علیه وسلم.

दुआ गोः

मोहम्मद कासिम अज़ीज़ी

खादिम दारुल ओलूम अहले सुन्नत फैजुल इस्लाम

मेंहदावल, सन्तकबीर नगर, यू०पी०

25 रबीउन्नूर 1434 हि० 7 फरवरी 2013

हज़रत मौलाना नूरुल होदा मिस्बाही

उस्ताज़: दारुल ओलूम अहमदिया मेराजुल उलूम

सरपरस्त: हाफ़िज़े मिल्लत लाइब्रेरी, धर्म सिंघवा बाज़ार

मीडिया इंचार्ज : तंज़ीम अब्ना-ए-अशरफिया, ज़िला संत कबीर नगर

मो० नं० : 08004755257

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ .

गेरामी क़द्र मौलाना अख़तरुल क़ादरी अपने हल्के में एक सादा सिफ़त मुबल्लिगा और बेबाक खतीब की शक्त में मुतआरफ़ हैं, तक्ररीबन बारह साल तक देहली में उन्होंने दीनी खिदमात अंजाम दीं, वहाँ मदरसा में तदरीस के साथ उसके बाज़ इन्तेज़ामी उमूर भी देखते थे और इदारा की आमदनी के ज़राए बढ़ाने के लिए हमेशा कोशां रहते थे, मगर इन्तेज़मिया की जानिब से खातिर ख्वाह हौसला अफ़जाई न होने की वजह से मौलाना मौसूफ़ ने महसूस किया कि उनके ज़ेरे असर रह कर दीन की भरपूर खिदमत करना बहुत मुश्किल है, इसलिए उन्होंने देहली जैसे खूबसूरत शहर को खैरबाद कह दिया और अपने आबाई वतन से क़रीब मौज़ा सेवाइच पार, ज़िला संत कबीर नगर में एक दारुल उलूम की बुनियाद रखी.

इब्तिदाई मराहिल में उन्हें काफी दिक्कतों और लोगों के तान व तशनीअ का सामना करना पड़ा, लेकिन रहमतो नूर की बारिश हो हाफ़िज़े मिल्लत अल्लामा शाह अब्दुल अज़ीज़ अलैहिर्हमा बानी जामिया अशरफिया मुबारकपुर की क़ब्रे अनवर पर जिनका इरशाद है “हर मुखालेफ़त का जवाब काम है”.

इस जुमले ने मौलाना मौसूफ़ को इतनी कूवत बख़शी कि उन्होंने मुखालेफ़ीन व मुआनेदीन की तरफ एक नज़र उठा कर भी नहीं देखा और बहुत क़लील मुद्दत में अपने इदारा को हस्बे हैसियत बामे ओरूज तक पहुंचा दिया. आज मौलाना का इदारा एक अज़ीम ग्राउण्ड और मुख़्तलिफ़ कमरों पर मुश्तमिल है, जहाँ इब्तिदाई दर्जात के साथ हिफ़ज़ की तालीम भी जारी है, हर साल सालाना जलसे के मौके पर बहुत से उलमा-ए-केराम तशरीफ़ लाते हैं और उनकी जिद्दो जोहद को सराहते हुए उनकी

हौसला अफ़जाई फ़रमाते हैं.

मौलाना की सबसे बड़ी खुसूसियत यह है कि छोटी-छोटी आबादियों में खुद जाते हैं, या अपने इदारा के असातज़ा और तलबा को भेजते रहते हैं जो भोले भाले मुसलामानों को दीनी मसाइल सिखाते और उन्हें उनकी पैदाइश का मक़सद बताते हैं, नमाज़, रोज़ा और ज़कात वगैरा की तलकीन करते हैं, इस दरमियान उन्होंने एक ऐसी किताब की ज़रूरत महसूस की जिस की क़ीमत कम हो और जुबान इन्तिहाई आसान और आम फ़हम हो, इस ज़रूरत की तकमील के लिए उन्होंने “आदाबे बन्दगी ” नाम की एक किताब तरतीब दी, जिसमें इस्लामी ज़िन्दगी के बहुत सारे मसाइल बड़े अच्छे पैराये में बयान किये गए हैं, उम्मीद है यह किताब अवाम के लिए बहुत मुफ़ीद होगी.

मैं उनकी सलाहियत और लियाक़त के बारे में बहुत तब्सेरा तो नहीं कर सकता, मगर इतना ज़रूर कह सकता हूँ कि जो भी सलाहियत अल्लाह जल्ला शानुहु ने उनको अता की है उससे वह कौमो मिल्लत की भरपूर खिदमत कर रहे हैं. अल्लाह तआला उनकी दीनी खिदमात को कुबूल फरमाए और उनकी लगज़िशों को मआफ़ फरमाए.

नूरुल होदा मिस्बाही

उस्ताज़: दारुल ओलूम अहमदिया मेराज़ुल उलूम